ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

*गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥*

मासिक

# गुरमति ज्ञान

**फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५५०**

**वर्ष १२ अंक ७ मार्च 2019**

***संपादक* : सतविंदर सिंघ फूलपुर**

***सहायक संपादक* : जगजीत सिंघ**

**चंदा**

| | |
|---|---|
| सालाना (देश) | १० रुपये |
| आजीवन (देश) | १०० रुपये |
| सालाना (विदेश) | २५० रुपये |
| प्रति कापी | ३ रुपये |

***चंदा भेजने का पता***

**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी**

**(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)**

**श्री अमृतसर साहिब-१४३००६**

**फोन** : 0183-2553956-60

**एक्सटेंशन नंबर**

**वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304**

**फैक्स** : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

**विषय-सूची**

| | |
|---|---|
| गुरबाणी विचार | ४ |
| संपादकीय | ६ |
| श्री गुरु नानक देव जी के आविर्भाव-काल . . . *-डॉ. सुदेश भाटिया* | ९ |
| होला-महल्ला : युद्ध-कौशल के अभ्यास का पर्व *-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'* | १८ |
| . . . भाई मरदाना जी *-स. निरपाल सिंघ जलालदीवाल* | १९ |
| गुरसंगत (कविता) *-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ* | २० |
| मालो मांगा सिख दुइ . . . *-स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा* | २१ |
| अमर शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ *-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'* | २३ |
| शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज सिंघ *-डॉ. जगजीत कौर* | २६ |
| धर्म माता-पिता की गोद में खेलता है *-प्रिं. नरिंदर सिंघ 'सोच' (दिवंगत)* | ३१ |
| विश्व-आध्यात्मिकता और शबद-गुरु सिद्धांत . . . *डॉ. जोरावर सिंघ* | ३५ |
| सच की राह पर जूझने वालों को प्रोत्साहित करें *-श्री प्रशांत अग्रवाल* | ३८ |
| सिक्ख पंथ में स्त्री की श्रेष्ठ महत्ता *-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ* | ४० |
| गुरबाणी में महिला-उत्थान संबंधी आए विचार *-डॉ. परमजीत कौर* | ४५ |
| *ख़बरनामा* | ४९ |

Final

# गुरबाणी विचार

*चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥*
*संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥*
*जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥*
*इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥*
*जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥*
*सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥*
*जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥*
*हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥*
*चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥* *(पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में चेत्र मास की ऋतु और इससे संबंधित क्रियाओं के बारे में सांकेतिक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस कालखंड को प्रभु-नाम-चिंतन-मनन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमति मार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चेत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। इस समय यदि जिह्वा से अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आया सफल गिना जाए, चूंकि मनुष्य-जीवन का मूल प्रयोजन यही है :

*भई परापति मानुख देहुरीआ ॥*
*गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥*
*अवरि काज तेरै कितै न काम ॥*
*मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥* *(पन्ना ११)*

गुरु पातशाह हरेक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख़्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि परमात्मा की पावन समृति के बगैर यदि एक पल भी जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, पुलाड़ में, आकाश में व्याप्त हो रहा है, यदि ऐसा मालिक मनुष्य को याद ही न आए तो उसका कितना दुख होगा! दूसरी ओर जिन्होंने परमात्मा को याद किया है वे बहुत ही भाग्यशाली अथवा महान हैं। ऐसे सुजनों को देखकर मन परमात्मा के दीदार की इच्छा की कामना करता है, मन में

Final

उसके दीदार की प्यास बनी रहती है। चेत्र मास में जो मुझको परामात्मा से मिला दे मैं उसके चरण छू लूं!

बारह माहा मांझ की पहली पावन पउड़ी, जिससे यह पावन बाणी प्रारंभ होती है, यूं है :

*किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥*
*चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥*
*धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥*
*जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥*
*हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥*
*जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥*
*स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥*
*प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥*
*नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥*
*हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥* *(पन्ना १३३)*

अर्थात् हे परमात्मा! हम मनुष्य अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण आपसे बिछुड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप हमें अपनी कृपा करके अपने साथ मिला लो। चारों ओर तथा दसों दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आए हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिले तो वृक्ष अथवा पौधा सूख जाता है। यदि असल मित्र-प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां? जिस घर अथवा हृदय में प्रभु-पति नहीं प्रकट होते वह घर अथवा हृदय भट्ठी जैसी दुखदायक प्रतीति देता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अथवा बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दिखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे स्वामी! कृपा करके अपना नाम बख़्श दो। हे मालिक! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदैव स्थिर है।

Final

संपादकीय

# होले की करमाति

करमाति के अर्थ हैं-- बख़्शिश, रहमत, करामाती-शक्ति। होले-महल्ले के पवित्र और ऐतिहासिक पर्व की देश-कौम के प्रति बहुत महान बख़्शिशें हैं। गुरु साहिबान द्वारा सृजित किए संकल्प, सिद्धांत, परंपराएं, खालसाई पर्व आदि मानवता के लिए रौशन-मीनार हैं। ये मानवता में रूहानी आनंद और शारीरिक एवं मानसिक निरोगता पैदा करते हैं। ये स्वार्थ-भावना में ग्रसित तथा सोई ज़मीरों को झकझोर कर उन्हें जगाने का सामर्थ्य रखते हैं। ये भारतीय परंपरा के निरर्थक और बासी रीति-रिवाज़ों से खालसा पंथ को अलग कर 'सिक्ख एक निराली कौम है' की गवाही भरते हैं।

होला-महल्ला का खालसयी पर्व कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की पवित्र धरती पर युद्ध-अभ्यास के रूप में शुरू किया। गुरु जी का युद्ध उनके साथ था जो 'पंथ प्रचुर करबे' में रुकावट खड़ी करते थे, जो इस जगत में घिनौने कर्म करते थे, जो धर्मी-राज्य की स्थापना में रुकावट थे, जो गरीब जनता को तंग करते थे। १६९९ ई. में गुरु जी ने खालसा पंथ की सृजना की और १७०० ई. में खालसा फौज के युद्ध-अभ्यास के लिए होले-महल्ले की शुरूआत की। सारांशत: बुराई को खत्म कर नेकी का राज्य स्थापित करने के लिए गुरु जी ने जहां मानवीय आत्मिक विगास के लिए बाणी उच्चारण की वहीं युद्ध-अभ्यास हेतु होले-महल्ले का पर्व शुरू करवाया। होला का अर्थ है-- हल्ला या हमला करना और महल्ला का अर्थ है-- हमलावरों के उतरने की जगह, जिस जगह पर उन्होंने कब्ज़ा जमाने के लिए हमला किया है। इस तरह दोनों के शब्दों के सुमेल से शब्द बना-- 'होला-महल्ला'। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी खालसा फौज को दो दलों में बांट देते। एक दल निश्चित स्थान पर काबिज़ हो जाता और दूसरा दल उस स्थान पर कब्ज़ा करने की कोशिश करता।

हज़ारों सालों से भारत में बदी पर नेकी की जीत के प्रतीक के रूप में होली मनाई जाती रही, परंतु व्यवहारिक रूप में कभी भी नेकी की जीत न हो सकी तथा बदी और भी प्रचंड रूप धारण करती रही। प्रह्लाद भक्त के परमात्मा पर विश्वास और उसके भक्ति-भाव की तो उपमा की जाती रही, परंतु संभूक को किसी ने भक्ति न करने दी। उसके लिए तो धर्म के रक्षक ही हिरण्यकशिपु बन गए। इस देश में ईश्वर के भक्तों को भक्ति करते हुए धार्मिक स्थानों में से धक्के मार कर बाहर निकाला जाता रहा, भक्ति करने वालों की जीभ काटी जाती रही, भक्ति श्रवण करने वालों के कानों में सिक्का पिघला कर डाला जाता रहा। ऐसे व्यवहारिक घटनाक्रम में नेकी की बदी पर जीत के जश्न केवल ढोंग नहीं तो और क्या था?

Final

कलगीधर पिता जी को ऐसे तथाकथित त्योहार पसंद नहीं थे। उन्होंने कहा कि मेरा खालसा बदी पर नेकी के लिए 'करनी-प्रधान' होगा। हम बदी पर नेकी की जीत करके दिखाएंगे। खालसा-पंथ धरती पर से बदी का खातिमा कर नेकी का राज्य स्थापित करने के लिए युद्ध-अभ्यास के रूप में इस दिन को होले-महल्ले के रूप में मनाया करेगा। खालसा पंथ की सृजना और स्वस्थ खालसयी त्योहारों के कारण यह सत्य साबित हुआ। हज़ारों सालों में जिस बदी पर नेकी की जीत न हुई वह खालसा पंथ ने कर दिखाई। मुगल राज्य की जड़ें उखाड़ कर खालसयी राज्य स्थापित किया। यह एक सच्चाई है कि ऐसा राज्य स्थापित करना हिंदवासियों के लिए कभी संभव न था, क्योंकि उनके अंदर *"चिड़ीओं से मैं बाज़ लड़ाऊं"* की भावना किसी अगुआ ने पैदा ही नहीं की थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा शुरू करवाया होले-महल्ले का युद्ध-अभ्यास आने वाले समय में बड़ी-बड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की फौजी प्रशिक्षण संस्थाओं को पराजित कर गया। इस युद्ध-अभ्यास में से जंग के पैंतरे सीख कर खालसायी फौज ने सभरावां जैसे मैदान में अति आधुनिक प्रशिक्षण प्राप्त अंग्रेज़ फौज का नींबू की भांति लहू निचोड़ दिया। इससे पहले इसी युद्ध-अभ्यास के कारण चालीस सिंघों ने चमकौर की गढ़ी में दस लाख फौज का मुकाबला कर दिखाया। इसी युद्ध-अभ्यास के परिणामस्वरूप हज़ारों साल की गुलामी के बाद देश को आज़ाद करवाया गया। इसी युद्ध-अभ्यास ने जनरल हरबखश सिंघ, चीफ मार्शल अरजन सिंघ, जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा), जनरल बिकरम सिंघ, जनरल सुबेग सिंघ, निरमलजीत सिंघ (सेखों) जैसे बहुत-से सिक्ख जरनैल तैयार किए, जिन्होंने अपनी बहादुरी का सदका देश की आबरू को पैरों में रौंदने से बचाया। जनरल हरबखश सिंघ ने सन् १९४७-४८ की भारत-पाकिस्तान की जंग, सन् १९६२ की भारत-चीन की जंग, सन् १९६५ की भारत-पाकिस्तान की जंग में गुरु साहिब की बख़्शिश का सदका देश की पीठ न लगने दी। इतिहास इस बात का गवाह है कि १९६२ ई की जंग में सिक्ख रेजिमेंट को छोड़ कर बाकी सभी फौजी भगौड़े हुए थे। १९६५ ई की जंग में भी डोगरा रेजिमेंट के अफसर और सिपाही अपने हथियार फेंक कर, जान बचा कर भाग निकले थे। फिर सिक्ख बटालियन मैदान में उतरी और पाकिस्तान के २४० पैटन टैंकों के आगे छाती तान कर टैंकों को तबाह कर दिया। जनरल चौधरी ने तो यहां तक हुक्म जारी कर दिया था कि पीछे हट कर सतलुज दरिया को युद्ध-रेखा बना लो, मगर जिसके पूर्वजों ने कलगीधर पिता जी से युद्ध-अभ्यास के पैंतरे सीखे हों वो इतनी जल्दी हार कैसे मान सकता था? जिसके पूर्वजों ने श्री हरिमंदर साहिब की सुरक्षा के लिए शहादत दी हो वह श्री हरिमंदर साहिब को छोड़कर पीछे कैसे हट सकता था? गुरु के सिक्ख जनरल हरबखश सिंघ ने वाहगा तथा खेमकरण बार्डर पर खड़े होकर ही पाकिस्तानी फौज का सामना किया था। १९७१ ई में भी सिक्ख रेजिमेंटों को छोड़ बाकी भारतीय फौज भगौड़ा थी। सरदार जगजीत सिंघ (अरोड़ा) ने सिक्ख फौज के साथ पाकिस्तानी फौज को आत्मसमर्पण करने के लिए मज़बूर कर दिया। यह सब कलगीधर पिता जी के खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति और होले-महल्ले के युद्ध-अभ्यास का ही परिणाम था।

Final

बेहद अफ़सोस कि भारतीय फिल्म-नगरी सोची-समझी साज़िश के अधीन इस मार्शल कौम को हमेशा अपनी फिल्मों में मज़ाक का पात्र बना कर पेश करती है। कुछ समय पहले 'सर्जिकल स्ट्राईक' पर एक फिल्म बनाई गई है। फिल्म का नाम है-- 'उड़ि'। इस फिल्म के शुरूआती दृश्य में ही एक फौजी हेलीकाप्टर में बहुत-से कमांडो फौजी बैठे 'सर्जिकल स्ट्राईक' के लिए जा रहे हैं। उन गैर-सिक्ख फौजियों में एक सिक्ख फौजी भी है। बाकी सभी फौजी चैतन्य बैठे दिखाये हैं, परंतु सिक्ख फौजी मुंह खोल ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे मारता हुआ दिखाया गया है। सभी फौजी सोए हुए सिक्ख फौजी की तरफ देख रहे हैं। एक गैर-सिक्ख फौज़ी अफ़सर उस सिक्ख फौजी के मुंह में रुई की बत्ती डालता है, जिससे सभी फौजी ठहाका मार कर हंसते हैं। उधर सिनेमा हाल में भी हंसी छिड़ जाती है। हो सकता है, हंसने वालों में कुछ भोले सिक्ख भाई भी हों, परंतु इस दृश्य को देखकर कई सिक्खों के हृदय को ठेस पहुंची है। यह अति निंदनीय है। यदि इस फिल्म के निर्देशक ने इस कहानी को निर्देशित करने से पहले भारत की जंगों का इतिहास पढ़ा होता और उसकी ज़मीर जिंदा होती, तो उसे यह दृश्य तैयार करते समय अवश्य शर्म आती। किसी विशेष मुहिम पर जाते समय कोई कमांडो खर्राटे मारकर सोया हुआ हो, यह बेहद गैर-जिम्मेदाराना हरकत है। एक सिक्ख कमांडो फौजी को इस तरह उपहासास्पद किरदार में दिखा कर पूरी सिक्ख कौम का मज़ाक उड़ाया गया है। इन लोगों को इस बात का एहसास होना चाहिए कि यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान इस प्रकार खर्राटे मारते तो महमूद गज़नी से भारत की २२०० बहू-बेटियों को कौन छुड़ाता? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते होते तो १९४७-१९४८, १९६२, १९६५ ई की जंग कौन जीतता? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते होते तो १९७१ ई जनरल नियाज़ी के घुटने कौन टिकाता? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते तो कारगिल की जंग कौन जीतता? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते तो आज देश का नक्शा कुछ और ही होता। पता नहीं, इन बेगैरत लोगों की नफरत कब थमेगी। फिल्म बनाने वाले निर्देशक या इसे पास करने वाले सेंसर बोर्ड ने कभी होले-महल्ले के करतब देखे होते, तो उन्हें पता होता कि सिक्ख फौजी उस कौम के वारिस हैं जिसके साठ-साठ वर्षीय बुजुर्ग दो-दो घोड़ों पर खड़े होकर पूरी रफ्तार के साथ भागते हुए अपनी शस्त्र-विद्या के जौहर दिखाते हैं; जिसके अस्सी-अस्सी वर्षीय बुजुर्ग शूरवीर भी शीश हथेली पर रख कर रण-भूमि में जूझते हुए दुश्मनों को मार भगाते हैं। सिक्खों को नीचा दिखाने की यह सोच बेहद घटिया है जो सिक्खों को अपने ही घर में बेगानेपन का एहसास दिलाती है।

*सतविंदर सिंघ फूलपुर*
*फोन : +९१९९१४४-१९४८४*

Final

# श्री गुरु नानक देव जी के आविर्भाव-काल की परिस्थितियां तथा उनका गुरु जी की बाणी में वर्णन

*-डॉ. सुदेश भाटिया**

श्री गुरु नानक देव जी के आविर्भाव का समय राजनीतिक उथल-पुथल का युग है। उस काल के इतिहास पर विचार करने पर हम विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रधानता पाते हैं, जिन्होंने श्री गुरु नानक देव जी को जनता की पुकार पर राजनीतिक क्षेत्र में आने के लिए बाध्य कर दिया।

*राजनीतिक परिस्थिति :* सातवीं शताब्दी से ही भारत पर मुसलमानों के आक्रमण आरंभ हो गए। गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, लोदी वंश तथा बाबर के समय तक मुसलमान शासक भारतीयों पर अत्यधिक अत्याचार करते रहे, जिससे देश की स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई। फलतः श्री गुरु नानक देव जी के आविर्भाव से पहले सम्पूर्ण भारतीय समाज संत्रस्त था और इसका प्रभाव समाज की रीति-नीति, साहित्य, चिंतनधारा आदि पर पड़ रहा था। राजनीतिक परिस्थिति विशृंखल-सी ही रही। शासक वर्ग के आपसी मतभेद तथा नाना प्रकार के षड्यंत्रों के कारण केंद्रीय शासन शिथिल और कमज़ोर बना रहा।

तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण श्री गुरु नानक देव जी ने अत्यंत मार्मिक ढंग से किया है। लोग मृगों और बाजों के समान अपनी जाति के लोगों को फंसाने वाले हो गए हैं। उनकी हकूमत है और उनका नाम पढ़े-लिखों में गिना जाता है। वे अपनी जाति के लोगों को अपने बंधन में बांधने का प्रयत्न करते हैं :

*हरणां बाजां तै सिकदारां एन्हा पड़िआ नाउ ॥*
*फांधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥*
*(पन्ना ७६७)*

राजा और उसके कर्मचारियों की भी वही स्थिति है :

*राजे सीह मुकदम कुते ॥*
*जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥*
*चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥*
*रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना ७६७)*

राजा सिंह के समान हिंसक वृत्ति वाले बन गए हैं और उनके कर्मचारी लालची कुत्ते के समान हैं। वे सोये हुए लोगों को जगाते हैं अर्थात् लोगों को डराते-धमकाते हैं। राजाओं के सेवक अपने तीव्र नाखूनों से लोगों के शरीर पर घाव कर देते हैं और उनका रक्त कुत्तों के समान चूसते हैं, उनका शोषण करते हैं, अपने स्वार्थ के लिए जनता को सताते हैं। गुरु जी ने कलियुग का वर्णन करते हुए कहा है कि कलियुग छुरी है, राजे कसाई हैं। धर्म अपने पंखों द्वारा न जाने कहां उड़ गया है। झूठ मानो अमावस्या की रात्रि है, जिसमें सत्य रूपी चंद्रमा उदित नहीं होता :

*कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥*
*कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥*
*(पन्ना १४५)*

अंधकार में सृष्टि अहंकार के कारण दुखी है :

*आधेरे राहु न कोई ॥*
*विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ (पन्ना १९१)*

इस अंधकारपूर्ण समय के निर्मम लोगों का वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी

**बी-१७, रिफाइनरी टाउनशिप, बेगूसराय (बिहार)-८५१११७*

Final

फरमान करते हैं :

*कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥*
*कूडु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥*
*(पन्ना ७६७)*

कलियुग में लोग कुत्ते के मुंह वाले हो गए हैं और उनकी खाद्य-वस्तु मुर्दे का मांस हो गई है। लोग कुत्तों के समान लालची हो गए हैं। झूठ बोलते हैं और धर्म संबंधी समस्त विचार समाप्त हो चुके हैं।

उन्होंने तत्कालीन बादशाह बाबर के आक्रमणों की ओर भी संकेत किया है। बाबर ने सन् १५२१ ई में ऐमनाबाद पर आक्रमण किया। इस क्रूर शासक ने जनता को अत्यधिक तंग किया, स्त्रियों की अत्यंत दुर्दशा की, दीनों का रक्त चूसा और भोलीभाली जनता के कोमल हृदय को ठेस पहुंचायी :

*जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूर ॥*
*से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥*
*(पन्ना २९२)*

जिन स्त्रियों के सिर की मांग में पट्टी (शृंगार का एक भूषण) थी और उस मांग में शृंगार के लिए सिंदूर डाला गया था, उनके सिरों को कैंची से मूंड दिया गया है और धूल उड़-उड़ कर उनके गले तक पहुंच रही है। इतना ही नहीं :

*महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ (पन्ना २९२)*

जो महलों में निवास करती थीं, उन्हें अब बाहर कहीं बैठने के लिए भी स्थान नहीं मिल रहा है। वे विवाहिता नारियां अपने-अपने पति के साथ सुशोभित होती थीं। वे हाथी-दांत के टुकड़ों से बनी हुई पालकियों पर बैठकर आई थीं। उनके ऊपर पानी छिड़का जाता था और हीरे-मोती से जड़े हुए पंखे उनके पास चमकते थे :

*जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥*
*हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥*
*उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥*
*(पन्ना २९२)*

एक लाख रुपए तो उनके खड़े होने पर न्योछावर किए जाते थे और एक लाख रुपयों की वर्षा उनके बैठने पर की जाती थी। जो स्त्रियां गरी-छुहारे खाती थीं और सेजों पर रमण करती थीं, उनके गले की मोती की लड़ियां टूट गई हैं और उन लड़ियों के स्थान पर उनके गले में रस्सी पड़ी हुई है :

*इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥*
*गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥*
*तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोत सरीआ ॥*
*(पन्ना २९२)*

धन और यौवन दोनों ही मानो उनके शत्रु बन गए हैं :

*धनु जोबनु दुइ वैरी होए . . . ॥ (पन्ना २९२)*

तत्कालीन हिंदू राजाओं को रंग और तमाशों के चाव में अपने कर्त्तव्य भी विस्मृत हो गए। उन्होंने न तो बाबर का सामना किया और न प्रजा की रक्षा कर सके। बाबर के समय में हिंदू शासक हतवीर्य हो गए। उनकी दशा दयनीय हो गई :

*बाबर वाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥*
*(पन्ना २९२)*

मुसलमानों (पठानों) की नमाज का समय खो गया और हिंदुओं की पूजा भी जाती रही। बिना चौके के हिंदू स्त्रियां किस प्रकार स्नान करें और चंदन लगावें? जिन लोगों ने कभी 'राम' को भी नहीं याद किया था, अब वे 'खुदा' कहने के लिए तरसते हैं :

*इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥*
*चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥*
*रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥*
*(पन्ना २९२)*

जब जनता ने आक्रमणकारी बाबर के हमले के बारे में सुना तो उन्होंने बाबर की

Final

फौज को रोकने के लिए करोड़ों पीरों की आराधना की मगर सभी प्रयास निष्फल गए। मुगलों और पठानों में घमासान युद्ध हुआ, जिसका वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं :

*मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥*
*ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥*
*(पन्ना २९४)*

श्री गुरु नानक देव जी ने बाबर के आक्रमण को स्वयं अपनी आंखों से देखा था। उस आक्रमण का वर्णन करते हुए उन्होंने फरमान किया है :

*खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥*
*आपै दोसु न देई करता*
*जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ (पन्ना ३६४)*

मुगलों ने यम के रूप में हिंदुस्तान पर आक्रमण किया। इतनी मार-काट हुई कि लोग करुणा से चिल्ला उठे। गुरु जी ईश्वर से उस कारुणिक दृश्य की बात करते हुए फरमान करते हैं :

*जे सकता सकते कउ मारे*
*ता मनि रोसु न होई ॥ (पन्ना ३६४)*

यदि शक्तिशाली पुरुष किसी वीर से लोहा लेना चाहे, तो यह उचित प्रतीत होता है, किंतु यदि वीर पुरुष निर्बल को मार डालता है तो इसमें उसकी बहादुरी नहीं धक्केशाही है :

*सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥*
*(पन्ना ३६४)*

उन्होंने लाहौर पर बाबर के आक्रमण की चर्चा करते हुए फरमान किया है :

*लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥*
*(पन्ना १४१२)*

लाहौर शहर में जहरीला जुल्म सवा पहर तक चढ़ा रहा। उन्होंने बाबर के ऐमनाबाद के आक्रमण के अवसर पर भाई लालो जी को संबोधित करते हुए कहा है कि बाबर पाप की बारात लेकर काबुल से चढ़ आया है। शर्म और धर्म दोनों ही छिप गए हैं। झूठ प्रधान हो गया है। काजियों और ब्राह्मणों की बात समाप्त हो गयी है। उन्हें कोई नहीं पूछता। अब उनके स्थान पर शैतान विवाह पढ़वाता है अर्थात् आक्रमणकारी लड़कियों को छीनकर उन्हें अपनी पत्नी बना लेते हैं। मुसलमानों की स्त्रियां दुखी होकर कुरान पढ़ रही हैं और खुदा से प्रार्थना कर रही हैं। मुगल सिपाही पठान स्त्रियों पर भी अत्याचार कर रहे हैं। खून के गीत गाये जा रहे हैं और स्थान-स्थान पर रक्त का केसर छिड़का हुआ है :

*पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ*
*जोरी मंगै दानु वे लालो ॥*
*सरमु धरमु दुइ छपि खलोए*
*कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥*
*काजीआ बामणा की गल थकी*
*अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥*
*मुसलमानीआ पड़हि कतेबा*
*कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥*
*जाति सनाती होरि हिदवाणीआ*
*एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥*
*खून के सोहिले गावीअहि नानक*
*रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥ (पन्ना ७२२)*

श्री गुरु नानक देव जी ने इस राजनीतिक स्थिति को देखते हुए भविष्य की ओर संकेत करते हुए फरमान किया :

*आवनि अठतरै जानि सतानवै*
*होरु भी उठसी मरद का चेला ॥*
*सच की बाणी नानकु आखै*
*सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ (पन्ना ७२३)*

*सामाजिक परिस्थिति :* उस समय की सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने बतलाया है कि समाज में नाना प्रकार के ढकोसले चल पड़े थे। वास्तविक धर्म को न तो कोई समझ ही सकता था और

Final

न ही उन्हें समझाने वाला कोई था। ऐसे समय में श्री गुरु नानक देव जी ने वाह्याडंबरों की निंदा की। उन्होंने ब्राह्मणों, योगियों, शाक्तों तथा जैनों के आडंबरों का वर्णन किया है।

जो व्यक्ति परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाते हैं, वे ही इन आडंबरों में भटकते रहते हैं। कुछ तो चोआ-चंदन के द्वारा अपने शरीर को सुगंधित बनाकर बगुले के समान समाधि लगाते हैं और कुछ राम-नाम को भूलकर मूर्ति-पूजा में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं।

योगी शरीर पर भस्म-लेपन करता है, किंतु उसके हृदय में अज्ञानता के कारण अंधकार है। वह बाहर से तो खिंथा, झोली आदि धारण करके अनेक वेश बनाता है, किंतु दुर्बुद्धि और अहंकारयुक्त है। माया-मोह में फंसने के कारण वह परमात्मा के नाम का उच्चारण नहीं करता। वह मूर्ख लालच और भ्रम के कारण भटकता रहता है तथा मानव-जीवन की अमूल्य बाजी सांसारिक प्रपंच रूपी जुए में हार जाता है :

*बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥*
*खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥*
*साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥*
*अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥*
*नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥*
*(पन्ना १२४३)*

इस समय समाज में ब्राह्मण तथा योगियों के अतिरिक्त जैनियों के ढकोसले भी प्रचलित थे। उनका वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं :

*सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी*
*जूठा मंगि मंगि खाही ॥*
*फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा*
*पाणी देखि सगाही ॥* *(पन्ना १४९)*

इतना ही नहीं, वे भेड़ों की तरह बाल नुचवाते हैं और मां-बाप की कीर्ति गंवा देते हैं :

*भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥*
*माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥*
*(पन्ना १४९)*

समाज की स्थिति भयावह-सी प्रतीत होती है। चोरों, व्यभिचारियों, वेश्याओं और कुटनियों की मजलिस लगती है। इन अधर्मियों की आपस में मित्रता है और खाने-पीने में भी आपसी व्यवहार है। वे परमात्मा की प्रशंसा और उसके तत्व को नहीं जानते। उनमें शैतान का ही निवास है, इसीलिए वे पाप-कर्मों में ही लगे रहते हैं :

*चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥*
*वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥*
*सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥*
*(पन्ना ७९०)*

ऐसे लोगों की तुलना करते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं :

*गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥*
*(पन्ना ७९०)*

गधे को चाहे जितना भी चंदन मलें, वह धूल में लेटना नहीं छोड़ता। गुरु जी का विचार है कि झूठ को कातने से झूठ का ही ताना-बाना बनता है। बुरे कर्मों का फल बुरा ही होता है। झूठ का कपड़ा नापकर उसे पहनना और पहनने का मान करना झूठा ही है :

*नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा तणीऐ ताणु ॥*
*कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥*
*(पन्ना ७९०)*

वे समाज की सामान्य स्थिति को ध्यान में रखकर फरमान करते हैं :

*बांगा बुरगू सिंङीआ नाले मिली कलाण ॥*
*(पन्ना ७९०)*

तात्पर्य कि मुल्ला बांग देकर, फकीर तूती बजाकर और योगी शृंगी बजाकर 'कल्याण हो, कल्याण हो' कहकर मांगते हैं। समाज के

Final

लगभग सभी व्यक्ति दूसरों का धन हड़पने के फेर में हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय की सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए फरमान किया है कि परमात्मा को केवल अल्लाह नाम से संबोधित किया जा रहा है। मंदिरों और देवालयों पर कर लग गए हैं :

*आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी ॥*
*देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥*
*(पन्ना ११९१)*

अजान का स्वर सुनाई पड़ता है। मुसल्ले पर नमाज पढ़ी जाती है और बनवारी का स्वरूप नील वर्ण का हो गया है। घर-घर में मियां-मियां होने लगा है और सभी जीवों की बोलियां भी बदल गई हैं :

*कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥*
*घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ . . .*
*चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥ (पन्ना ११९१)*

समाज के लोग ज्ञान के बिना ही गीत गाते हैं। भूखे मुल्ला भोजनार्थ घर को ही मस्जिद बना लेते हैं। लोग निकम्मे होकर अपना कान फड़वा लेते हैं। याचक बनकर अपनी प्रतिष्ठा गंवा देते हैं। वे कहलाते पीर हैं और मांगते हैं भिक्षा :

*गिआन विहूणा गावै गीत ॥*
*भुखे मुलां घरे मसीति ॥*
*मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥*
*फकरु करे होरु जाति गवाए ॥*
*गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥*
*ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (पन्ना १२४५)*

समाज के बेकार लोगों के ढोंग का चित्रण श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में उपस्थित किया है।

वे तत्कालीन समाज में प्रचलित कर्मकांड की विधियों का संकेत भी अपनी बाणी में करते हैं। मूर्ख लोग मांस-मांस कहकर झगड़ा करते हैं। वे ज्ञान-ध्यान नहीं जानते। वे यह नहीं जानते कि कौन-सी वस्तु मांस है और कौन-सी साग तथा किस वस्तु में पाप समाया हुआ है :

*मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥*
*कउणु मासु कउणु सागु कहावै*
*किसु महि पाप समाणे ॥ (पन्ना १२८९)*

यह सोचकर कि देवता मांस खाना पसंद करते हैं, लोगों द्वारा गैंडे मारकर होम-यज्ञ किए जाते हैं :

*गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥*
*(पन्ना १२८९)*

जो व्यक्ति मांस खाना छोड़कर मांसाहारियों के समीप बैठने में बदबू के कारण नाक-भौं सिकोड़ते हैं, वे ही रात में मनुष्य-भक्षण करते हैं। वे दुनिया को दिखाने के लिए पाखंड रचते हैं, किंतु जानते कुछ भी नहीं :

*मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥*
*फड़ु करि लोका नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ (पन्ना १२८९)*

गुरु जी फरमान करते हैं कि वही व्यक्ति (अध्यात्म जगत में) अंधा है, अज्ञानी है, जो अज्ञानतावश कर्मों को करता है। उसके हृदय में ज्ञान की आंखें नहीं हैं :

*नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ*
*कहै न कहिआ बूझै ॥*
*अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ (पन्ना १२८९)*

कलयुग में हर व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को भूल गया है। शील, संयम और पवित्रता का नाम ही नहीं। लज्जा और प्रतिष्ठा समाप्त हो चुकी है और स्त्री-पुरुष अपने-अपने में ही मग्न हैं :

*रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥*
*सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥*

Final

*सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥*
*(पन्ना १२४३)*

उस युग में सर्वाधिक अपमान नारी का हुआ। वह घृणा और वासना की प्रतिमूर्ति समझी गई, नरक की खान समझी गई। तुलसी जैसों ने भी उसे हेय समझा और उसका तिरस्कार किया, किंतु श्री गुरु नानक देव जी ने उसे पुरुष के बराबर अधिकार प्रदान किया और समाज में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने की अनुमति प्रदान की। उनकी दृष्टि में पुरुष को जन्म देने का गौरव नारी को ही है, अत: वह प्रतिष्ठा की प्रतिमा है :

*भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥*
*भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥*
*भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥*
*सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥*
*भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥*
*नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥*
*(पन्ना ४७१)*

नारी की दयनीय स्थिति को देखकर श्री गुरु नानक देव जी ने उसके प्रति सहानुभुति प्रकट की और उसे समाज में उचित स्थान प्रदान किया।

उन्होंने जात-पात के भेदभाव को मिटाया और लोगों को बताया कि सब एक ही ईश्वर से उत्पन्न होते हैं, एक की ही संतानें हैं, अत: किसी की कोई विशेष जाति नहीं। सब एक तरह से जन्म लेते हैं और एक ही ढंग से मृत्यु को भी स्वीकार करते हैं।

समाज में धनियों की प्रतिष्ठा थी और निर्धनों को सताया जाता था। धनवान गरीबों का खून चूसते थे और गरीब शांति की सांस भी नहीं ले सकते थे। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लालो जी और मलिक भागो के उदाहरण द्वारा लोगों को बताया कि गरीबों की कमाई सत्य की कमाई है, ईमानदारी की कमाई है और धनवानों की कमाई गरीबों का चूसा खून है।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी पर विचार करने से ज्ञात होता है कि गुरु जी ने अपने समय के समाज के लोगों के विभिन्न विभाजनों पर प्रकाश डाला है। समाज के लोग नाना प्रकार के वाह्याडंबरों में प्रवृत्त हो रहे थे, वास्तविक धर्म तथा सही मार्ग को भुला कर इधर-उधर भटक रहे थे। कुछ लोग जीविकोपार्जन के लिए सन्यासी का भेस धारण कर जनता को ठगते थे और कुछ मूर्ख ज्ञान-ध्यान को भूलकर पाखंडों में लिप्त थे।

*धार्मिक परिस्थिति :* श्री गुरु नानक देव जी सामाजिक और धार्मिक चिंतक थे। उन्होंने अपने समय की धार्मिक परिस्थितियों का भी वर्णन किया है और उनका सुधार करने की भी चेष्टा की है। उस समय समाज में अनेक धर्मों और संप्रदायों का बोलबाला था। हिंदू धर्म, वैष्णव, शैव, शाकत बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सूफी तथा इसलाम धर्म प्रमुख रूप से प्रचलित थे। विभिन्न वाह्याडंबरों की प्रधानता हो गई और वास्तिविक धर्म गौण हो गया। सभी धर्मों के प्रचारक अपने-अपने धर्म को प्रधान मानकर जनता पर अपना प्रभाव जमाने की चेष्टा कर रहे थे। हिंदू धर्म की वास्तविक आत्मा का अंत हो चुका था। वह दिन-ब-दिन नीचे ही गिरता जा रहा था। उसमें अनेक प्रकार के पाखंड एवं पूजा के नए विधान बन गए थे। समाज में धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के तंत्र-मंत्र, जादू-टोने तथा भ्रम और वहम फैल गए थे। इतिहासकार मानते हैं कि धर्म निरा पाखंड ही बन चुका था। राज-उपद्रव और समाज-उपद्रव की भांति धर्म भी जनता पर अनेक प्रकार के उपद्रवों के रूप में छा गया था। धन की प्राप्ति के लिए धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के नीच कर्म हो रहे थे। कर्म-धर्म के नाम पर स्त्रियों

Final

की भी दुर्गति की जाती थी। उनकी धार्मिक परिस्थिति बड़ी ही शोचनीय एवं दयनीय हो गई थी। ऐसी परिस्थिति में लोग अपनी संस्कृति के आदर्शों को भूलते जा रहे थे। वे उस काल का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सत्य का अकाल पड़ गया है, झूठ की प्रधानता हो गई है और कलियुग के पापों की कालिमा के कारण लोग भूत बन गए हैं :

*सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥*
*बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥*
*जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥*
*नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥*
*(पन्ना ४६८)*

यदि मन को वास्तव में ईश्वर की भक्ति में रंगना हो तो झूठ को त्याग कर सत्य को अपनाना चाहिए। जगत में जीवों के लिए लालच राजा है, पाप मंत्री है और झूठ सिक्के बनाने वाला चौधरी है। इस लालच और पाप के दरबार में काम नायब है, जिसे बुलाकर सलाह ली जाती है। प्रजा ज्ञान से विहीन होने के कारण अंधी हो गई है, जिससे वह अग्नि रूपी तृष्णा को बढ़ावा दे रही है। तात्पर्य कि वास्तविक धर्म फीका पड़ गया है। लोग पाखंडी हो गए हैं। लालच, पाप, झूठ, काम और तृष्णा की प्रधानता हो गई है। इन तामस प्रवृत्तियों को अपना लेने के कारण लोगों में अज्ञानता बढ़ गई है। फलतः जो व्यक्ति खुद को ज्ञानी कहलवाते हैं, वे नाचते हैं, बाजे बजाते हैं और नाना प्रकार के स्वांग बनाकर शृंगार करते हैं। वे पढ़े-लिखे मूर्ख कोरी चालाकी और तर्क-वितर्क करना जानते हैं। वे माया के आकर्षणों को एकत्र करने में तत्पर हैं।

कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो अपने आपको यति मानते हैं, जबकि वास्तविक यति बनने की युक्ति नहीं जानते, यों ही देखा-देखी घर-द्वार छोड़ बैठते हैं। अविद्या के आवरण के कारण सभी लोग अपने आपको पूर्ण समझते हैं, किंतु श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मनुष्य तौल में तभी पूरा उतरता है जब तराजू के दूसरे पलड़े में प्रतिष्ठा रूपी बटखरा रखा जाए।

चारों युगों का वर्णन करते हुए गुरु जी कलियुग के विषय में बतलाते हैं कि प्रत्येक युग में रूप और सारथी बराबर बदलते रहते हैं। उस रहस्य को कोई ज्ञानी ही समझ सकता है :

*सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥*
*त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥*
*दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥*
*कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥*
*(पन्ना ४७०)*

सतयुग में संतोष का रथ था और धर्म रथ के अग्र भाग में बैठने वाला सारथी था। त्रेता में संयम का रथ था और शौर्य सारथी द्वापर में तप का रथ था और सत्य सारथी कलियुग में तृष्णाग्नि का रथ है और झूठ सारथी है। कलियुग में सचमुच तृष्णा और झूठ ही प्रधान हो गए हैं। फलतः लोगों में वाह्याडंबरों की प्रधानता हो गई है :

*पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥*
*सिल पूजसि बगुल समाधं ॥*
*मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥*
*त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥*
*गलि माला तिलकु लिलाटं ॥*
*दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥*
*जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥*
*सभि फोकट निसचउ करमं ॥* *(पन्ना ४७०)*

ब्राह्मणों में वाह्याडंबरों की प्रधानता हो गई है। शाक्त कर्मकांडों में लीन हैं। जैन अज्ञानतावश भटक रहे हैं। योगी नाना उपकरणों को धारण कर जनता का ध्यानमात्र आकर्षित कर रहे हैं। मुल्ला अपनी बातों में ही लोगों को लगाकर लूटना चाहता है। लोग वास्तविक धर्म से बहुत दूर जा चुके हैं। श्री गुरु नानक देव

Final

जी ने अपनी बाणी में उन्हें धर्म का वास्तविक मार्ग दिखलाने का प्रयत्न किया है।

उस समय की धार्मिक परिस्थितियों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि श्री गुरु नानक देव जी ने योगियों को योगी बनने की युक्ति बताई, ब्राह्मण के वास्तविक लक्षण समझाए, मुसलमान को मुसलमान बनने के ढंग बतलाए; हिंदू तथा मुसलमानों का उचित पथ-प्रदर्शन किया।

*सामाजिक परिस्थिति :* उस समय की सामाजिक परिस्थिति पर विचार करने पर हम पाते हैं कि राजनीतिक परिस्थितियों के विशृंखल हो जाने के कारण समाज में उच्छृंखलता आ गई। शासकों के अत्याचारों के कारण जनता निराश एवं दुखी थी।

ब्राह्मण अपने आपको हिंदू धर्म का अधिष्ठाता समझते थे और शेष जाति के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। फलत: शूद्र समझी जाने वाली जातियों का दिन-ब-दिन पतन होता गया। उन्हें समाज में प्रतिष्ठा न मिल सकी। यहां तक कि वे हिंदू देवालयों में भी नहीं जा सकते थे। किसी देवी-देवता की पूजा करने के लिए वे मंदिर के द्वार पर पांव भी नहीं रख सकते थे। फलत: धीरे-धीरे वे स्वयं ही अपने आपको नीच समझने लगे और उच्च जातीय लोगों के अत्याचार चुपचाप सहन करने लगे।

सामाजिक परिस्थितियों पर ध्यान देने से पता चलता है कि उस समय समाज में एकता का अभाव था। समाज में स्त्रियों का कोई स्थान नहीं था। शासक जब चाहते उन पर अत्याचार कर सकते थे। हिंदू एवं मुसलमान दोनों को उनके धार्मिक अगुआ-- ब्राह्मण एवं काजी या मुल्ला कूटनीति के द्वारा ठग रहे थे। धर्म का सच्चा स्वरूप समाप्तप्राय हो चला था। नीची समझी जाने वाली जातियों पर नाना प्रकार के अत्याचार होते थे। उनकी स्थिति पशुओं से भी अधिक गयी-बीती थी। धर्म और समाज में उनके लिए कोई स्थान नहीं था। गरीबों की पुकार सुनने का किसी के पास समय नहीं था। कुछ व्यक्ति रोजगार के अभाव में विभिन्न भेस धारण कर योगी, सन्यासी, काजी और मुल्ला के रूप में निरीह जनता को लूटने का काम करते थे। लोगों का दिन-ब-दिन नैतिक पतन हो रहा था और वे अपने वास्तविक धर्म को भूलकर बहुत नीचे गिर चुके थे। धर्म ने तो पाखंड का रूप ही धारण कर लिया था।

*आर्थिक परिस्थिति :* अन्य परिस्थितियों के अतिरिक्त श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में तत्कालीन आर्थिक परिस्थितियों का भी वर्णन किया है। उन्होंने 'आसा की वार' में सगुण वेशधारी गोपी और श्रीकृष्ण बनकर रासलीला करने वाले पाखंडियों की निंदा करते हुए फरमान किया है :

*रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥*
*आपु पछाड़हि धरती नालि ॥* *(पन्ना ४६५)*

अन्न, धन के लिए लोग रासधारी बन गए हैं और विभिन्न वेश धारण कर लोगों को ठगते हैं। जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए ही वे बहुरूप धारण कर संसार में विचरण करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी की दृष्टि में ऐसे व्यक्ति दूसरों के हक की कमाई खाते हैं। गुरु जी उन्हें संबोधित करते हुए फरमान करते हैं :

*हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥*
*(पन्ना १४१)*

दूसरों के हक का अन्न खाना हिंदू के लिए गाय खाने के समान है और मुसलमान के लिए सूअर खाने के समान है।

गुरु जी ने अर्थ की ओर संकेत करते हुए बतलाया कि लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे दूसरों को ठगने का प्रयत्न करते थे।

*साहित्यिक स्थिति :* श्री गुरु नानक देव जी के

Final

समय की साहित्यिक स्थिति पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि इस धार्मिक संघर्ष के युग में सभी विचारकों ने पद्य को गद्य की अपेक्षा अपनी रचनाओं में अधिक स्थान प्रदान किया। सिद्धों ने अपनी छंदोबद्ध रचनाओं के लिए 'संध्या भाषा' का प्रयोग किया और अपने मतवाद को एक रूप देने की चेष्टा की। दोहा, चौपाई आदि छंदों का प्रयोग नाथों की रचनाओं में प्राय: सिद्धों का ही अनुकरण है।

हिंदुओं का उच्च वर्ग संस्कृत में अपने विचारों को अभिव्यक्त करता था। संस्कृत में टीकाओं और व्याख्याओं की रचना होती थी।

पठान और मुगल शासकों ने फारसी को राज-काज की भाषा बनाया था। फारसी में अनेक इतिहास-ग्रंथों की सृष्टि हुई। विद्वानों का कथन है कि आवश्यकतानुसार तथा रुचि की पूर्ति के लिए संस्कृत भाषा वाले ग्रंथों के अनुवाद होने लगे। संस्कृत के अनेक धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रंथों का अनुवाद भी फारसी में हुआ। साहित्यिक दृष्टि से इस युग में उच्च कोटि के काव्यों की रचना भी हुई, जो साहित्य-शास्त्र की विशेषताओं से मंडित हैं। रस, अलंकार छंद आदि की दृष्टि से उत्कृष्ट रचनाएं भी लिखी गईं। भारतीय चिकित्सा-शास्त्र विश्वविख्यात था।

उस समय साहित्य को पूर्णरूपेण राज्याश्रय न मिलने पर भी विभिन्न धर्मों के विद्वान अपने-अपने धर्म-प्रचारार्थ नाना प्रकार की रचनाओं में लगे रहे। उन विद्वानों की रचनाओं द्वारा ही उस समय का साहित्य समृद्ध हो सका। भक्त कबीर जी अपनी सधुक्कड़ी भाषा में जनता को उपदेश दे रहे थे। उन्होंने अपने उपदेशों के लिए साखी, सबदी और रमेनी का प्रयोग किया। उन्होंने विभिन्न अक्षरों के आधार पर 'बावन अखरी' जैसी बाणियां भी प्रस्तुत कीं। इधर सूफी कवि भी बारहमाहा और अठमाहा जैसी रचनाएं अथवा लंबे प्रेमाख्यानकों को प्रस्तुत करने में तल्लीन थे। उन्होंने दोहा और साखी जैसी रचना का भी सृजन किया। इसके अतिरिक्त उनके काव्यों में हम 'बावन अखरी' के समान अलिफ आदि अक्षरों के आधार पर लिखी गई रचनाएं भी पाते हैं। महाराष्ट्र में भक्त नामदेव जी ने अपनी छंदोबद्ध शैली में धर्म का उपदेश दिया।

इस प्रकार सिद्ध, नाथ, जैन, वैष्णव, शैव, शाक्त, सूफी तथा इसलाम धर्म के समर्थक अपने-अपने धर्मों का प्रचार करने के लिए साहित्य की विभिन्न प्रणालियों का सहारा ले रहे थे।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के बीच दीन जनता की करुण प्रकार सुनकर उसका उद्धार करने के लिए ही श्री गुरु नानक देव जी संसार में आए। इन परिस्थितियों का पूरा प्रभाव हम उनकी रचनाओं में पाते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी पर विचार करने पर तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों का भी ज्ञान हो जाता है। 'सिध गोसटि' बाणी इस ओर इंगित करती है कि उस समय भी आज के समान गोष्ठियां होती थीं। इस बाणी में सिद्धों द्वारा किए गए अनेक प्रश्न हैं और श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिए गए उत्तर।

'दखणी ओअंकार' और 'आरती' जैसी बाणियां तत्कालीन साहित्य का जीवंत उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त 'जपु जी साहिब' में सिद्धों के साथ बैठकर सृष्टि आदि के संबंध में विचार करना भी इस बात का द्योतक है कि उन्होंने केवल समाज, कर्म और राजनीति की ओर ही ध्यान नहीं दिया, बल्कि साहित्य की ओर भी उनकी दृष्टि थी, जिसके लिए सभाएं हुआ करती थीं।

*(सधन्यवाद पुस्तक 'संत कवि नानक : एक अनुशीलन')*

Final

# होला-महल्ला : युद्ध-कौशल के अभ्यास का पर्व

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक उद्घोष बड़ा प्रसिद्ध है-- *"चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं . . . सवा लाख से एक लड़ाऊं . . . तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।"* अर्थात् मैं चिड़ियों को इतना शक्तिशाली बना दूंगा कि वे बाज़ को मार सकें . . . एक-एक इंसान को इतना बहादुर बना दूंगा कि वो अकेला सवा-सवा लाख से टक्कर ले सके। इसी लिए दशमेश पिता ने सन् १६९९ ई की वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की सृजना करके शोषित-पीड़ित मानवता को प्रबल सैन्य-शक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया।

वैसे तो छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी-पीरी की दो कृपाणें धारण कर सिक्खों को शस्त्रधारी बना दिया था, परंतु दशमेश पिता के काल में सिक्खों के सैन्यीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र हो गई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब को सिक्खों के राजनीतिक एवं सैन्य केंद्र के रूप में विकसित किया और अनंदगढ़, लोहगढ़, फतिहगढ़, तारागढ़ तथा होलगढ़ नामक पांच सुदृढ़ किलों का निर्माण कराया। खालसा पंथ की सृजना के साथ ही सिक्खों के सैन्यीकरण का पहला दौर संपन्न हो गया।

दशमेश पिता चाहते थे कि सिक्खों में वीर रसात्मक उल्लास एवं मानवता की रक्षा की प्रेरणा का भाव सदा बना रहे, अत: आपने सिक्खों के व्यवस्थित सैनिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया।

इसी सिलसिले में गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब में होला-महल्ला मनाने की परंपरा शुरू की। उन दिनों भारत में फाल्गुन महीने की पूर्णिमा वाले दिन रंगों से भरी 'होली' खेलने का रिवाज़ था। गुरु जी ने पूर्णिमा से अगले दिन वीर रसात्मक खेलों और करतबों से भरपूर होला-महल्ला मनाने का निर्देश दिया।

*प्रथम होला-महल्ला :* प्रथम होला-महल्ला श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चेत्र प्रतिपदा १७५७ बिक्रमी अर्थात् सन् १७०० ईस्वी में श्री अनंदपुर साहिब के किला होलगढ़ में मनाया।

यहां संपूर्ण खालसा सेना के दो भाग किए गए और उनमें युद्ध का अभ्यास कराया गया। इसके पश्चात दीवान सजे, गुरबाणी का पाठ किया गया एवं अंत में कड़ाह प्रसाद और गुरु का लंगर वितरित किया गया। दीवान की समाप्ति पर विजेता दल को सिरोपा बख़्शिश करके सम्मानित किया गया।

इस प्रकार दशमेश पिता ने होला-महल्ला पर्व के माध्यम से सिक्खों में वीर रसात्मक उल्लास और मानवता की रक्षा की प्रेरणा भरने का पुख्ता प्रबंध कर दिया।

इसके बाद होला-महल्ला मनाने की जो परंपरा आरंभ हुई वह आज तक अटूट रूप से चल रही है।

*श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला :* तीन सौ से भी अधिक वर्ष हो गए, आज भी होली से अगले

*(शेष पृष्ठ २२ पर)*

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फ़ोन : ९४१७२-७६२७१*

Final

# श्री गुरु नानक देव जी के रूहानी साथी : भाई मरदाना जी

*-स. निरपाल सिंघ जलालदीवाल**

पंजाब की धरती को इस बात का फख्र है कि इसने महान क्रांतिकारी, युग-परिवर्तक योद्धा, महाकवि और लोकनायक श्री गुरु नानक देव जी को जन्म दिया, जिन्होंने अपनी कृपा-दृष्टि के द्वारा जनमानस को सरशार कर दिया। अपने क्रांतिकारी कार्यों के द्वारा उन्होंने हर प्रकार के अनैतिक तत्वों, ज़ोरावर हमलावरों और पाखंडियों का पर्दाफाश कर लोगों को धर्म के मार्ग पर चलाया। आप जी बचपन से ही गहर-गंभीर तथा सोचवान थे और दुनियावी कामों से ऊंचे महान सरोकारों को धारण किए हुए थे। गुरु साहिब ने अपने समय की प्रचलित शिक्षा को अच्छी तरह से ग्रहण किया, क्योंकि उनके पिता जी पढ़े-लिखे, साधन-सम्पन्न और समाज के इज़्ज़तदार एवं माननीय व्यक्ति थे। गुरु जी हमेशा साधु-संतों की संगत करके खुशी प्राप्त करते। साखीकारों के अनुसार गुरु जी ने अपने पिता जी की तरफ से मिली काफी बड़ी रकम, जिससे वे कोई व्यापार करना चाहते थे, को भूखे साधुओं को भोजन छकाने पर खर्च किया।

बचपन से ही भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक देव जी के बहुत ही निकटवर्ती साथी रहे और लगभग समूचा जीवन उन्होंने इकट्ठे महान कार्यों को समर्पित कर दिया। प्रो. जनक राज पुरी ने अपनी पुस्तक 'गुरु नानक देव जी का रूहानी उपदेश' में लिखा है कि गुरु जी का भाई मरदाना जी के साथ इतना प्यार था कि वे तलवंडी में निकटस्थ संबंधियों के साथ भी इतने खुश नहीं होते थे, जितने भाई मरदाना जी के साथ थे।

भाई मरदाना जी ने ज़िंदगी के सैंतालीस साल का लंबा समय गुरु जी के साथ बिताया। जन्म-साखियों के लेखकों के बिना महान सिक्ख विद्वान भाई गुरदास जी समेत प्रत्येक लेखक ने श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई मरदाना जी की संगत की पुष्टि की है। भाई मरदाना जी गरीब घराने से संबंध रखते थे और मुसलमानों में अति पिछड़ी समझी जाती जाति डोम में से थे। दुनियावी तौर पर ऐसा मेल पूर्णतः वर्जित था, परंतु गुरु जी ने सबसे पहले ऐसी सोच और मानवता-विरोधी रुचियों का विरोध घर से ही शुरू किया। यह भी सत्य है कि गुरु जी की महानता को भाई मरदाना जी ने भांपा था और उन्होंने गुरु जी का साथ जीते-जी बिलकुल नहीं छोड़ा था।

भाई गुरदास जी ने अपनी पहली वार में श्री गुरु नानक देव जी को नायक के रूप में पेश करते हुए वार को हर प्रकार की अमानवीय शक्तियों पर फतह प्राप्त करने को समर्पित किया है। इस वार की पहली २२ पउड़ियों में श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश से पहले की घोर अंधकारमयी अवस्था का ज़िक्र करते हुए भाई गुरदास जी ने ज़िक्र किया है कि जुल्मों की भट्टी में जलती जनता है-है (हाय-हाय) कर रही थी। भाई साहिब के अनुसार हिंदू आपस में ब्राह्मणी विचारों, वेदों, उपनिषदों, खट-दर्शन आदि के विवादों में घिरे हुए थे। बौद्धी और जैनी अपने धर्म-सिद्धांतों के कारण आपस में उलझे हुए थे। मुसलमान रोज़े, नमाज़, पीरों, पैगंबरों और औलियों के चक्कर में फंस कर झगड़ रहे थे। योगी मत रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति

**गांव-डाकखाना : जलालदीवाल, तहसील : रायकोट, ज़िला : लुधियाना-१४११०९*

Final

में भटक चुका था। इस समूची अधोगति और युगगर्दी में जलती लोकाई को बचाने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने जन्म (प्रकाश) लिया। भाई गुरदास जी के अनुसार :

*सुणी पुकारि दातार प्रभु*
*गुरु नानक जग माहि पठाइआ। (वार १:२३)*

जब श्री गुरु नानक देव जी ने ध्यान-मग्न होकर देखा तो उन्हें सारी धरती जुल्मों की भट्टी में जलती हुई नज़र आई। जब गुरु जी "धरति लुकाई" के उद्धार हेतु निकले तो वे अपने साथ किसी और को नहीं बल्कि अपने परखे हुए साथी भाई मरदाना जी को साथ लेकर गए। चारों दिशायों में, देश-देशांतर में भ्रमण करते हुए बड़े-बड़े तीर्थ-स्थानों पर एकत्र हुई अंधविश्वासियों की भीड़ को गुरु जी की मधुर बाणी और भाई मरदाना जी की रबाब मोहित कर लेती। हिंदुओं, मुसलमानों, बौद्धियों, जैनियों तथा योगियों के बड़े-बड़े केंद्रों पर भाई मरदाना जी और श्री गुरु नानक देव जी की रूहानी जोड़ी ने ज्ञान-गोष्ठियों एवं ईश्वरीय-कीर्तन के द्वारा सत्य का उपदेश दिया। भाई गुरदास जी अपनी पहली वार की ३५वीं पउड़ी में मक्का-बगदाद की यात्रा के समय भाई मरदाना जी की गुरु साहिब के साथ मौजूदगी की मोहर लगाते हैं :

*इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।*
*(वार १:३५)*

श्री गुरु नानक देव जी और भाई मरदाना जी की प्रीति और दिली सांझ गुरमति की विचारधारा पर आधारित थी। विचारों की समानता के बिना दोस्ती या प्रीति चल नहीं सकती। गुरु जी का भाई मरदाना जी के साथ प्यार उनके गुणों और उनकी सोच का गुरु-आशय के अनुसार होने के कारण था। भाई मरदाना जी भी गुरु जी के साथ रहते हुए और उनकी संगत करते हुए रूहानी शख़्सियत बन गए थे, जैसे हर पल चंदन के पास रहते हुए कोई चंदन जैसा ही हो जाता है।

भाई मरदाना जी केवल रबाबी ही नहीं, बल्कि गुरमति मार्ग के पक्के यात्री भी थे। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई मरदाना जी को बहुत ही मान-सम्मान प्रदान किया और ज़िंदगी में उनको अपने दुख-सुख में हमेशा के लिए भागीदार बनाया।

कविता

## गुरसंगत

*-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ**

*गुरसंगत को मान दिया ॥*
*सारा ही स्वमान दिया ॥*
*संगत गुरसरूप हुई ॥*
*गुर निवाजश रूप हुई।*
*मानवता कर एक बिठाई ॥*
*सभी सारे भेद मिटाई ॥*
*शबद धवनी ऊची कर माई ॥*
*सारे गुरमुख जीव मिलाई ॥*
*मैं चरण धूड़ बन जाऊं ॥*
चरण धूड़ से जीवन पाऊं ॥

**पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फ़ोन : ९४१७१-७५८४६*

Final

# मालो मांगा सिख दुइ . . .

*-स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

भाई मालो और भाई मांगा श्री गुरु नानक पातशाह के शोभायमान सिक्ख थे। दोनों कीर्तन और कथा बड़े प्यार के साथ किया करते थे। दोनों एक दिन पातशाह के दर्शन के लिए आए। भाई मालो और भाई मांगा दोनों ने मिल कर निरंकार स्वरूप पातशाह के आगे विनती की– "पातशाह हजूर! हमें कोई उपदेश दो, जिससे हमारे जीवन का उद्धार हो जाए, हमारा जन्म-मरण कट जाए।" पातशाह ने वचन किया– "मन और इंद्रियों को काबू में रखना है। प्रभु की भक्ति करनी है। कथा और कीर्तन करना है। जीव तामसी तप करके कर्म करता है, जो निरर्थक हैं। अग्नि-तप करके शरीर को आग में जलाना, ठंडे जल के तप से शरीर को शीत के साथ ठंडा करना, उलटा तप (बाजू ऊपर करके सुखा देना), उलटा लटकना, एक पैर पर खड़े होना, जंगलों में रहना और कंदमूल खाकर गुज़ारा करना, तीर्थ-भ्रमण करके चंद्रायणी तप (एक तरह का व्रत, जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार एक ग्रास मोर के अंडे के बराबर से शुरू करके घटाया, बढ़ाया जाता है) आदि तामसी तप हैं और कठिन हैं :

*अगनि ताप ना जल महि रहिनो।*
*ब्रत करनो सीतोसन सहिनो।*
*ऊरध बाहु अधो सिर करना।*
*खरे होनि चिर लौ इक चरना ॥५॥*
*कंद मूल चुनि खावने, तीरथ तीर निवास।*
*भूमि भरम, चंदारिणी तम गुण ए तप रास ॥६॥*

*(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अध्याय ४३, पोथी चौथी, पृष्ठ ११२५)*

इसके लिए आसान कर्म करने की ज़रूरत है। आसान कर्मों में इंद्रियों तथा मन को एकाग्र कर कथा एवं कीर्तन में ध्यान लगाकर गाना और सुनना है। इनका फल बड़ा और मेहनत थोड़ी है। भाई मांगे ने पूछा, "पातशाह! हमने तो सुना था कि जो बड़ी मेहनत करेगा वो बड़ा फल पायेगा। आपका वचन है कि कथा और कीर्तन सुगम कर्म है और फल बड़ा है। यह हम जीवों की समझ में नहीं आती। इसका ज्ञान तो दो।" पातशाह ने वचन किया– "भाइओ! जो लकड़हारे लकड़ियां लाते हैं और जो गठरी लाते हैं, यह मज़दूरी तो बड़ी है, परंतु लाभ थोड़ा होता है। दूसरे, जो नमक और अन्न की दुकान करते हैं, उनकी मेहनत तो कम है लेकिन लाभ ज्यादा होता है। जौहरी और बजाजी (कपड़े वाले) उनसे भी कम मेहनत करते हैं, गहनों तथा रुपयों का सौदा करते हैं और लाभ ज्यादा होता है। जौहरी मोती और हीरों का व्यापार करते हैं तथा बैठे-बैठे ही बहुत ज्यादा लाभ होता है। इस तरह और जो तप हैं उनसे शरीर को कष्ट ज्यादा होता है। ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। कथा-कीर्तन और पढ़ने-सुनने से तो उपासना दृढ़ होती है, बाद में इसमें से ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इसको 'सातकी तप' कहा जाता है।" पातशाह के ये वचन भाई मालो और भाई मांगा ने दृढ़ कर लिए। बाद में भाई मालो पोथी से

**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु प्र कमेटी), श्री अमृतसर-१४३००६, फोन : ९८१४८९८२१२*

Final

गुरु की बाणी की कथा करते और भाई मांगा सम्मुख बैठ कर इंद्रियों तथा मन को संकोच कर सुनते थे। फिर दोनों मिल कर कीर्तन करते थे। उनकी रसना से सिक्खों को रस आता था। सब संगत उनके कीर्तन से आनंद लेती थी। भाई गुरदास जी का ऐसा ही कथन है भाई मालो और भाई मांगा के बारे में :

*मालो मांगा सिख दुइ*
*गुरबाणी रसि रसिक बिलासी। (वार ११:१३)*

उनके कथा-कीर्तन का इतना आनंद आता था कि जो कोई सुनता, उसके पाप धुल जाते थे। दोनों धर्म की किरत (श्रम) कर बांट कर छकते और आए-गए सिक्ख की टहल-सेवा करते थे। इस तरह दोनों की सेवा से सारे इलाके का कल्याण हुआ। कवि संतोख सिंघ भाई मालो और भाई मांगा के बारे में लिखते हैं :

*जो जो सिख तिन ते सुनति*
*तयागहि ब्रिंद बिकार।*
*धरम क्रित करि वंडि कै अचवहि बहुर अहार।*
*सिख संत जाइ सु तिनके डेरे।*
*सेवा करिहीं भाउ घनेरे।*
*तिनके सदन देश जिस मांही।*
*भा उधार बहु तरन तहां ही।*
*जब जब आवहिं दरशन हेता।*
*शबद पढति नर ब्रिंद समेता।*
*भवबंधन ते होइ निहारे।*
*संगी अपर अनेक उधारे।*
*(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, अध्याय ४३)*

## *होला-महल्ला : युद्ध-कौशल के अभ्यास का पर्व*

*(पृष्ठ १८ का शेष)*

चैत्र प्रतिपदा वाले दिन होला-महल्ला पर्व मनाने के लिए श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ का भारी इकट्ठ होता है। दूर-दूर से अनेक श्रद्धालु इस अवसर पर गुरु की नगरी में पहुंचते हैं।

इस दिन श्री अनंदपुर साहिब में विशाल एवं भव्य नगर कीर्तन का आयोजन किया जाता है। इस नगर कीर्तन को 'महल्ला चढ़ना' कहा जाता है। 'पांच प्यारे' पहले किला अनंदगढ़ में अरदासा सोधते हैं। फिर 'निशान साहिब' लेकर किले से निकलते हैं अर्थात् चढ़ते हैं। साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित घोड़ों पर सवार 'गुरु की लाडली फौज' कहलाने वाले निहंग सिंघों के जत्थे होते हैं। नगाड़े की चोट पर 'बोले सो निहाल-सत श्री अकाल' के जयकारे गुंजाये जाते हैं।

किला अनंदगढ़ से चला नगर कीर्तन माता जीतो जी के देहरे किला होलगढ़ से होता हुआ हुई चरण-गंगा पार कर खुले मैदान में पहुंचता है।

यहां खालसा सेना युद्ध-कौशल के करतबों का अत्यंत शानदार प्रदर्शन करती है।

दोपहर के बाद नगर कीर्तन तख़्त श्री केसगढ़ साहिब की ओर निकलता है। यहां पहुंचकर नगर कीर्तन संपन्न होता है।

इसके पश्चात तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में दीवान सजाए जाते हैं। पवित्र गुरबाणी का कीर्तन होता है और समाप्ति पर अरदास की जाती है।

इस प्रकार श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला युद्ध की वीरतापूर्ण शौर्य-कलाओं के अभ्यास का पावन पर्व है। यह सिक्खों को शस्त्र-संचालन में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है, ताकि प्रतिबद्ध होकर शोषित-पीड़ित मानवता, देश और धर्म की रक्षा की जा सके।

Final

# अमर शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ

*-डॉ कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्खों को अलग, विशेष, उल्लेखनीय, सम्मानजनक और मार्शल व स्वाभिमानी कौम का रुतबा हासिल है। जितनी कुर्बानियां सिक्खों ने धर्म, सच, न्याय, समानता, समाजवाद और मानव की स्वतंत्रता व सम्मान की रक्षा हेतु दी हैं, इतनी कुर्बानियां विश्व के अन्य किसी भी समुदाय के लोगों ने नहीं दी। सिक्खी का स्वर्णिम इतिहास गौरवशाली एवं प्रेरणामयी है। सिक्खी के इतिहास के एक-एक पृष्ठ पर अनेक जांबाज़ सिक्खों की शहादतों का वर्णन पढ़ने व सुनने को मिलता है। ऐसे ही एक पृष्ठ पर महान शहीद पिता-पुत्र-- भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ के नाम दर्ज हैं।

प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, चिंतक तथा लेखक ज्ञानी भजन सिंघ लिखते हैं कि सन् १७४८ ई सिक्ख इतिहास में विशेष व महानता भरा साल है। एक ओर सिंघ संगठित (जत्थेबंद) हो रहे थे तो दूसरी ओर जुल्म भी अपनी चरम सीमा पर पहुंच रहा था। लाहौर के ज़ालिम व क्रूर शासकों ने इसी वर्ष दो महान शख़्सियतों पिता-पुत्र-- भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद किया था। इन दोनों महान् गुरसिक्खों को सिक्ख शहीदों में अमर स्थान प्राप्त हो गया।

भाई सुबेग सिंघ लाहौर (पाकिस्तान) से कुछ मील दूर स्थित गांव झंबर के वासी थे। वे बहुत समझदार, चिंतनशील, नीतिज्ञ, व्यापारी, ठेकेदार और स्वभाव के मिलनसार थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे अपने क्षेत्र में अति लोकप्रिय व सम्मानित व्यक्ति थे। इतने प्रसिद्ध व्यक्तित्व के स्वामी थे कि लाहौर का गवर्नर ज़करिया खां ज़ालिम भी उन्हें सिक्ख होने के बावजूद महत्त्व देता था और उसने उन्हें कुछ अरसे के लिए लाहौर का कोतवाल भी लगाए रखा। किसी सिक्ख द्वारा उस समय किसी सरकारी पद पर नियुक्ति पाना यदि असंभव नहीं था, तो कठिन अवश्य था। इसी वजह से भाई सुबेग सिंघ का नाम और प्रसिद्ध हो गया।

सरकारी ठेकेदार होने के बावजूद भाई सुबेग सिंघ बहुत ईमानदार थे। लाहौर के शासक उनका बहुत सम्मान करते थे। बात सन् १७२६ ई की है, जब ज़करिया खां अपने बाप की जगह लाहौर का गवर्नर बना, तब उसने भाई सुबेग सिंघ के साथ बातचीत के दौरान महसूस किया कि यह इंसान किसी वक्त बहुत काम आ सकता है, इसलिए इसे कुछ कहा न जाए अर्थात् तंग न किया जाए और इसके साथ यथावत् संबंध बनाकर रखे जाएं।

जो व्यक्ति कठोर हृदय वाले और निर्दयी होते हैं, वे जुल्म करने से रुकते नहीं हैं। ज़िला तरनतारन के वां गांव के वासी भाई तारा सिंघ को ज़करिया खां ने शहीद करवा दिया। इस पर पूरी सिक्ख कौम में गुस्सा फैल गया तथा सिक्ख कौम पुनः सरकार के साथ टक्कर लेने हेतु तैयार हो गई। दीवान दरबारा सिंघ तथा स. कपूर सिंघ फैज़लपुरिया के नेतृत्व में निर्णय

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फ़ोन : ९८७२२-५४९९०*

Final

लिया गया कि लाहौर सरकार से भाई तारा सिंघ की शहादत का बदला लेने हेतु आर्थिक नाकाबंदी कर दी जाए। फिर घटनाओं की लड़ी बनती चली गई।

सात वर्षों तक सिंघों ने लाहौर की ऐसी आर्थिक नाकाबंदी की कि ज़करिया खां की नाक में दम कर दिया। वह बहुत घबरा गया, क्योंकि सरकारी खज़ाना खाली हो गया था। बाहर से आती वसूली की रकम सिंघ रास्ते में ही छीन लेते थे। सैन्य सख़्तियां भी सफल न हुईं और अंत में हार स्वीकार करते हुए ज़करिया खां ने सिक्खों के साथ समझौता करने का मन बनाया। उसने सोचा कि इस काम में भाई सुबेग सिंघ उसकी मदद कर सकते हैं। उसने उन्हें संदेश भेज बुलवा लिया और कहा, "आप कई बार कहते रहे हैं कि सरकार को सिक्खों के साथ अपने संबंध बिगाड़ने नहीं चाहिए। अब सालस बनकर मेरा सिक्खों के साथ समझौता करवा दें।" भाई सुबेग सिंघ ने पूछा कि "समझौते की शर्तें क्या होंगी?"

"हमारे राज्य में सिक्ख गड़बड़ करना छोड़ दें।" उसने कहा।

"आप बदले में क्या देंगे?" भाई सुबेग सिंघ ने सीधे-सीधे पूछा।

"उनके एक नेता को नवाब का पद दे दिया जाएगा।" जकरिया खान ने जवाब दिया।

"बस?" भाई सुबेग सिंघ मुस्कराए। "वे नहीं मानेंगे।"

"आखिर सिक्ख चाहते क्या हैं?" ज़करिया खां झुंझलाया।

"पहले उन्हें उनके गुरुधामों की खुली यात्रा तथा सेवा-संभाल करने की अनुमति दी जाए।" भाई सुबेग सिंघ उसे समझाना चाहते थे कि सिक्खों को गुरुद्वारा साहिबान अपनी जान से ज्यादा प्यारे (प्रिय) होते हैं।

"यह छूट दे दी जाएगी।" ज़करिया खां ने यह सुझाव मान लिया।

"उन्हें जागीर भी दी जाए, ताकि गुरुद्वारा साहिबान की संभाल के लिए खर्च का प्रबंध हो सके।"

इस प्रकार भाई सुबेग सिंघ ने अनेक शर्तें लिखित रूप में मनवा लीं और श्री अमृतसर चले आए। यहां पर सिंघ पहले से मौजूद थे। भाई सुबेग सिंघ ने दीवान दरबारा सिंघ को संदेश भिजवाया और फिर मिलकर सारी स्थिति स्पष्ट कर दी। दीवान जी ने कहा कि वे अकेले कुछ नहीं कर सकते। यह सरबत्त खालसा का काम है कि वह ऐसा निर्णय ले।

"तो ठीक है। मुझे खालसा के इकट्ठ में बुलवा लिया जाए। मैं वहां पर सारी बातें रख दूंगा।" भाई सुबेग सिंघ ने विनम्रतापूर्वक विनती की।

खालसा के इकट्ठ में दीवान दरबारा सिंघ ने वह संपूर्ण पेशकश बयान की, जो सरकार की ओर से की गई थी। उस पर विचार-विमर्श किया गया। अनेक सिंघों की राय थी कि सरकार की इस पेशकश को ठुकरा दिया जाए। दीवान दरबारा सिंघ ने बताया कि स. सुबेग सिंघ इस इकट्ठ में उपस्थित होकर सारी स्थिति स्पष्ट करना चाहते हैं। खालसे ने तुरंत फैसला सुनाया कि वे उस सरकार के साथ हैं, जो सिक्खों के विरुद्ध है। अतः वे 'तनखाहिए' (दोषी) हैं। पहले वे 'तनखाह' भुगतें, फिर इकट्ठ (बैठक) में आ सकते हैं।

खालसे की ओर से जो उन्हें 'तनखाह' लगाई गई, उसे भाई सुबेग सिंघ ने अति विनम्रतापूर्वक संगत के जोड़ों (जूतों) के पास खड़े होकर गले में पल्लू डाल स्वीकार किया और फिर इकट्ठ में आकर अपनी विद्वता द्वारा

Final

सभी सिंघों को मना लिया कि सरकार की पेशकश को मान लिया जाए। जब तक निर्वाह होगा, तब तक सही। कम से कम गुरुद्वारा साहिबान की मरम्मत व देखभाल के लिए छूट तो रहेगी।

इस तरह भाई सुबेग सिंघ की बदौलत फैसला हो गया। स. कपूर सिंघ को नवाब का पद दे दिया गया।

इस फैसले पर ज़करिया खां बहुत खुश हुआ और उसने भाई सुबेग सिंघ को लाहौर का कोतवाल नियुक्त कर दिया। इस पद पर पहुंच कर भाई सुबेग सिंघ को लोगों का और ज्यादा प्यार व सम्मान मिलने लगा तथा मित्र व दुश्मन सभी उनकी योग्यता के प्रशंसक बन गए।

कट्टर स्वभाव के कारण ज़करिया खां की रार (तकरार) सिंघों के विरुद्ध पुन: अपना असर दिखाने लगी। ज़करिया खान ने भाई सुबेग सिंघ पर यह आरोप लगाकर कोतवाल के पद से हटा दिया कि वे सरकारी भेद सिंघों तक पहुंचाते हैं। भाई सुबेग सिंघ अपने पहले वाले कारोबार में लग गए। इतिहास स्वयं को दोहराता है। आजकल भारत सहित पूरे विश्व में सांप्रदायिक व कट्टर बहुसंख्यक लोग एवं संगठन अल्पसंख्यक लोगों पर भांति-भांति के जुल्म ढहाते हैं। वे उन्हें सौ बहाने बनाकर प्रताड़ित तथा तंग-परेशान करने में लगे हुए हैं।

भाई सुबेग सिंघ का सुपुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ अति सुंदर स्वरूप वाला तथा तीखे नयन-नक्शों वाला, चुस्त, होनहार, प्रभावशाली युवक था। अठारह वर्ष की आयु वाला वह बांका, शेर, जवान हर देखने वाले का मन मोह लेता था। जिस मौलवी के पास वह विद्या प्राप्त कर रहा था, उसने मन में सोचा कि इसे मुसलमान बनाया जाए और अपनी युवा बेटी की शादी इसके साथ कर दी जाए। उसने काफी कोशिश की, परंतु भाई शाहबाज़ सिंघ उसके जाल में न फंसा और उसके प्रत्येक यत्न को नाकाम कर दिया। अंत में मौलवी खीझकर उसे डराने-धमकाने लगा। भाई शाहबाज़ सिंघ को धर्म के विषय में काफी ज्ञान था। वह उसकी हर बात को अपने सटीक तर्क द्वारा काट देता और मौलवी को निरुत्तर कर देता। अंत में मौलवी ने क्षेत्र के शासक के पास झूठी शिकायत कर दी कि भाई शाहबाज़ सिंघ ने इसलाम धर्म का अपमान किया है। वह इसलाम धर्म के विरुद्ध बोलता है और लोगों को भड़काता है। कुछ उसी प्रकार के दोष लगाकर कहानी बनाई गई जिस प्रकार हकीकत राय के विरुद्ध बनाई गई थी। यही कुछ अब भी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश तथा अन्य कई देशों में हो रहा है।

भाई शाहबाज़ सिंघ को गिरफ्तार कर ज़करिया खां के पास लाहौर भेजा ही जा रहा था कि इस दौरान ज़करिया खां की मृत्यु हो गई। उसकी जगह यहिया खां पंजाब का गवर्नर बन गया। कुछ समय तक वह अपनी गद्दी बचाने में व्यस्त रहा तथा पिता-पुत्र का मामला नेपथ्य में चला गया। जब वह फुर्सत पा गया, तब उसने भाई शाहबाज़ सिंघ का वाद सुनना शुरू किया। उसने मौलवी के बयानात तथा क्षेत्र के शासक (चौधरी) की रिपोर्ट को सही मानकर भाई शाहबाज़ सिंघ को दोषी घोषित कर दिया तथा साथ ही भाई सुबेग सिंघ की गिरफ्तारी का भी आदेश दे दिया। बड़े दुख की बात थी कि दोनों निर्दोष पिता-पुत्र को लाहौर के बड़े काज़ी के सुपुर्द कर दिया गया। क्रूर व निर्दयी प्रचलित तरीके के अनुसार आदेश दिया गया कि मौत या इसलाम धर्म में से जो पसंद है, उसे चुन लो।

*(शेष पृष्ठ ४८ पर)*

Final

# शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज सिंघ

-डॉ जगजीत कौर*

तृतीय गुरुदेव श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

*गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥*
*सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥*
*ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥*
*तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥*
*(पन्ना १४१८)*

यह जीवन-अवस्था उस गुरमुख, गुरसिक्ख की होती है जो अकाल पुरख वाहिगुरु के सत्य स्वरूप, एकंकार-एकात्म स्वरूप में दृढ़ निश्चय रखता है, उसके हुक्म में प्रतिपल आस्थावान होता है, प्रभु के भय-भाव में विचरण करते हुए परोपकार, सेवा और मानव-सेवा में जीवन व्यतीत करता है, मानव-कल्याण में रत रहकर सत्य, न्याय, धर्म की रक्षा हेतु बड़े से बड़ा त्याग करता है, आवश्यकता पड़े तो अनाचार, अत्याचार, धक्केशाही का विरोध करते हुए अपने शरीर तक का दान कर देता है, मृत्यु को गले लगा लेता है, हंसते-हंसते धर्म-रक्षा हेतु शहीद हो जाता है, क्योंकि वह गुरु-वचनों को मानता है कि *"मरणु मुणसा सूरिआ हक है जो होइ मरणि परवाणो ॥"* तथा शहीद होकर विश्व-इतिहास में अपना निराला स्थान बना लेता है।

सिक्ख धर्म का इतिहास ऐसे महान शहीदों, जांबाज़ों की अकथ्य और असह कुर्बानियों, शहादतों की सुनहरी गाथाओं से भरपूर है, जिन्होंने मानव-धर्म, अपने सिद्धांतों और मानव-अधिकारों की रक्षा के लिए *"सिरु धरि तली गली मेरी आउ"* का खेल खेला है; *"पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस"* को जीवन-आधार मान शहीद हो गए। शहादत सिक्ख फलसफे का अभिन्न अंग है। विश्व-धर्मों में शहीद व शहादत का ऐसा अनोखा और विलक्षण स्वरूप कहीं भी देखने को नहीं मिलता। हिंदू धर्म में तो शहीद नाम का कहीं अस्तित्व ही नहीं है। शहीद अरबी-फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ है-- गवाही। 'महान कोश' के रचयिता भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार शहीद का अर्थ है-- सच्ची गवाही। धर्म-युद्ध में सत्य की गवाही भरते हुए धर्म की खातिर जो जान कुर्बान कर देता है वह शहीद कहलाता है। अंग्रेजी में इसे Martyrdom कहते हैं, जिसका मूल यूनानी भाषा में है। इसलाम धर्म के भारत में प्रवेश करने पर शहीद शब्द प्रचलित तो हुआ मगर इसलाम में यह शब्द केवल जिहाद के साथ जुड़ा है। सिक्ख धर्म में इसका व्यापक स्वरूप है, इसलिए सिक्ख धर्म में शहीदों की विशाल परंपरा है।

इसी परंपरा की विशाल कड़ी के जगमगाते सितारे शहीद भाई सुबेग सिंघ और उनके सुपुत्र भाई शाहबाज सिंघ हैं। सिक्ख धर्म को उत्पत्ति-काल से ही सियासी विरोध का सामना करना पड़ा है। सन् १५२६ से ही 'बाबर के' और 'बाबे के' अनुयायिओं के बीच द्वंद्व चलता रहा है। श्री गुरु नानक पातशाह ने मुगल बादशाह बाबर का विरोध किया। उसे 'पाप की बारात' लेकर आने वाला बताया, जो भारतवासियों को अपनी ताकत से भयभीत करता रहा। जहांगीर

*१८०१-सी, मिशन कंपाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (उ प्र)-२४७००१, मो ९४१२४-८०२६६

Final

बादशाह ने पंचम गुरुदेव श्री गुरु अरजन देव जी को यातनाएं देकर शहीद किया। शाहजहां बादशाह से मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने चार युद्ध किए और विजय प्राप्त की। औरंगज़ेब के बढ़ते अत्याचारों से त्रस्त कश्मीरी पंडितों की प्रार्थना सुन उन्हें दयनीय स्थिति से उबारने हेतु नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने दिल्ली के चांदनी चौक में शहादत दी। उनके सुपुत्र दशम् पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भारतवासियों में जालिमों का डटकर विरोध करने की भावना को उजागर करते हुए खालसा पंथ की साजना की, लोगों के हाथों में शस्त्र पकड़ाए और उन्हें धर्म-युद्ध के लिए प्रेरित किया; हिंदू पहाड़ी राजाओं का विरोध सहा। अपने चारों लख़्ते-जिगर, वृद्ध माता गुजरी जी की शहादत दी। उन्होंने सिक्खों में अन्याय का विरोध करने की जो भावना भरी उससे खालसा पंथ अनेक कुर्बानियां देते हुए विरोधी परिस्थितियों में भी सूर्यवत देदीप्यमान रहा और आज भी वह विश्व भर में मान-सम्मान का पात्र बन अद्वितीय तेजोमय प्रगति से केसरी निशान फहरा रहा है। इस दौरान यकीनन उसे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद ज़करिया खान पंजाब का गवर्नर नियुक्त हुआ। उसने निश्चय कर लिया था कि सिक्खों का नामोनिशान मिटा देना है। सिक्ख भी कहां मानने वाले थे! वे जंगलों में छिपे हुए भी मुगलों को चैन से नहीं बैठने देते थे। जकरिया खान जब सिक्खों के हाथों बहुत परेशान रहने लगा तो उसने भाई सुबेग सिंघ से विचार-विमर्श किया। भाई कान्ह सिंघ नाभा के 'महान कोश' के अनुसार, भाई सुबेग सिंघ लाहौर के गांव जंबर के रहने वाले थे। अब जंबर गांव पाकिस्तानी पंजाब के कसूर ज़िले में है। पिता का नाम राय भागा था। ये अरबी-फारसी के उत्कट विद्वान थे। इनके घराने के लोग सरकारी ठेकेदारी का काम करते थे। भाई सुबेग सिंघ अच्छे शिक्षित विद्वान होने के कारण सरकारी नौकरी में थे। ये वकील करके प्रसिद्ध थे। जकरिया खान अक्सर गंभीर मसलों पर इनसे सलाह-मशविरा लेता था। ये अत्यंत सुलझे हुए थे तथा उचित निर्णय दिया करते थे। जब सिक्खों की रोज़मर्रा की मारधाड़ से जकरिया खान परेशान रहने लगा तो उसने भाई सुबेग सिंघ से सलाह की कि सिक्खों से संधि कर लेनी चाहिए। ये सिंघों के प्रति अति ईमानदार थे। गुरु-घर के अनन्य सेवक थे। इनकी सेवाओं से लाहौर के सभी निवासी खुश थे। 'पंथ प्रकाश' के रचियता स. रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं :

*तुरक उसे खालसे वल तोरै,*
*खालसा भी तिसको भल लोरै।*
*कोई तुरकन परै जरूरी काम,*
*तौ उस भेजे कर कर सलाम।*

ज़करिया खान ने दिल्ली बादशाह को सुझाव भेजा कि सिक्खों को कुछ जागीर दे दी जाए; उन्हें नवाबी दे दी जाए और उनसे शांति का समझौता किया जाए। बादशाह की स्वीकृति पर ज़करिया खान ने भाई सुबेग सिंघ को वकील बना कर श्री अमृतसर भेजा। पहले तो सिक्ख उनकी बात सुनकर गुस्से में आए। उन्हें सरकारी नुमाइंदा समझ नाराज भी हुए। उन्हें दंड लगाया। सब कुछ भुगतने के बाद भाई सुबेग सिंघ ने सिंघों को समझाया कि उन्हें एक लाख सालाना आमदन की जागीर दी जा रही है, नवाबी-पद दिया जा रहा है, खिलअत दी जा रही है। फिर उन्होंने इस पर विचार किया। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार पहले तो सिंघों ने कहा :

*हम को सतिगुर बचन पातशाही*
*हम को जापत ढिग सोऊ आही।*

Final

*हम राखत पातशाही दावा*
*जां इतको जां अगलो पावा।*
*जो सतिगुर सिखन कही बात*
*होगु साई नह खाली जात ॥३७॥*

श्री अकाल तख़्त साहिब की सरप्रस्ती में इकट्ठे हुए खालसा ने बाद में भाई सुबेग सिंघ का मशविरा स्वीकार कर लिया, मगर कोई भी नवाबी लेने को तैयार नहीं हुआ। अंत में गुरमता पारित कर सरदार कपूर सिंघ फैज़लपुरीए को यह नवाबी स्वीकार करने को कहा गया। सरदार कपूर सिंघ उस समय संगत को पंखा झुला रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं ऐसे नवाबी नहीं लेता। पहले पांच सिंघ साहिबान के चरणों से नवाबी की खिलअत को छुआया जाए।" तब ऐसा करके उन्होंने नवाबी कुबूल की। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

*सिंघ कपूर झलै पखो थोई।*
*क्रिपा नज़र पंथ वल होई।*
*पंच भुजंगीअन चरनी छुहाइ।*
*धरो सीस मोहि पवित्र कराइ ॥४७॥*

इस समझौते के अनुसार खालसा को दीपालपुर, कंगणवाल, झबाल के परगनों की जागीर दी गई, जिससे एक लाख सालाना आमदनी थी। नवाबी पद, खिलअत के कई मूल्यवान नज़राने दिए गए। यह वाक्या १७३३ ई का है।

अब कुछ समय के लिए पंजाब के माहौल में शांति रही। भाई सुबेग सिंघ नगर कोतवाल रहे। सिक्खों के प्रति उनके मन में प्यार व सत्कार था। सिक्ख भी उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते थे। सिक्ख गुरमति प्रचार-प्रसार का कुछ समय शांत वातावरण वाला रहा। सन् १७४५ ई में ज़करिया खान की मृत्यु हो गई। लाहौर का सूबेदार १७४६ ई में यहिया खान नियुक्त किया गया। यह बहुत ज़ालिम किस्म का इंसान था। इसने फिर सिक्खों पर जुल्म करने शुरू कर दिए। इसने सिक्खों के कत्लेआम का हुक्म जारी कर दिया। यह अपने पिता ज़करिया खान और दादा अबदुस समद खान से भी कहीं बढ़कर ज़ालिम था। सन् १८९१ ई में सैयद मुहम्मद लतीफ द्वारा लिखित 'पंजाब का इतिहास' जब अंग्रेज़ी में छपा तो उसमें लिखा था कि "पंजाब के गवर्नर यहिया खान ने सभी सिक्खों के कत्लेआम का खुला ऐलान करते हुए यह हुक्म जारी किया कि जहां कहीं भी कोई सिक्ख मिले या दिखे, उसे जान से मार दिया जाए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम लेने वाले बाशिंदे की सज़ाए-मौत निश्चित है। सिक्खों के सिरों के मूल्य निश्चित किए गए। मृत या जीवित सिक्ख के सिर पर इनाम घोषित किए गए। हज़ारों सिक्ख रोज़ कत्ल किए जाते और उनके सिर लाहौर के सूबेदार के दरबार में पेश किए जाते। पेशकर्ता को इनाम दिया जाता।" (*History of Punjab, Calcutta, 1891, P.213*)

यहिया खान भाई सुबेग सिंघ से शुरू से ही नफरत करता था। उसकी सिक्खों के प्रति प्रेम-भावना की नीति उसे पसंद नहीं थी। मुल्ला-मौलवियों ने उसे और भड़काने के लिए भाई जी के खिलाफ शिकायतें कर उसके कान भरने शुरू कर दिए। यहिया खान भड़क उठा। उसने भाई सुबेग सिंघ को पकड़ कर ले आने का हुक्म जारी कर दिया।

इसी बीच भाई सुबेग सिंघ का बेटा भाई शाहबाज़ सिंघ भी अपने पिता की तरह अत्यंत कुशाग्र बुद्धि, होनहार, विद्वान, शिक्षित नौजवान हो गया। अरबी-फारसी की शिक्षा प्राप्त करने वह मौलवी के मदरसे में जाया करता था। भगत लछमण सिंघ अपनी पुस्तक 'The Sikh Martyr' में बताते हैं कि भाई शाहबाज़ सिंघ बेहद खूबसूरत, हंसमुख, उत्साही, रौशन-दिमाग और उन्नत विचारों का नौजवान था। उसकी मनमोहक शख़्सियत और अद्वितीय योग्यता से

Final

मौलवी इतना प्रभावित था कि वह उसे अपना दामाद बनाना चाहता था। वह चाहता था कि ऐसे योग्य नौजवान को इसलाम धर्म में दीक्षित कर लिया जाए और बेटी का रिश्ता उसके साथ कर दिया जाए। उसने सूबेदार यहिया खान से बात की। यहिया खान को भी यह बात बहुत पसंद आई। मौलवी ने एक दिन मौका पाकर मदरसे में इसलाम की तारीफ और सिक्ख धर्म के प्रति कुछ हीन भावना की चर्चा शुरू कर दी। भाई शाहबाज़ सिंघ यह सहन नहीं कर सके। उन्हें गुरमति व गुरबाणी का ज्ञान माता-पिता और परिवार द्वारा अत्यंत गहराई से दिया गया था। गुरमति के सिद्धांतों के आधार पर गुरबाणी के प्रकाश में उन्होंने सिद्ध कर दिया कि सिक्ख धर्म अत्यंत प्रगतिशील, उदारवादी, कुल मानव-कल्याण के लिए स्थापित किया गया सर्वकल्याणकारी, भ्रातृ-भाव-संपन्न धर्म है। इसलाम धर्म का भी उनका गहन अध्ययन था। उनके तर्क सुनकर बड़े-बड़े मौलवी एवं विद्वान आश्चर्यचकित रह गए। मौलवी ने उनके सामने इसलाम धर्म कबूल करने और पुत्री के विवाह की मंशा ज़ाहिर की, जिसे भाई शाहबाज़ सिंघ ने स्वीकार नहीं किया। मौलवी इसी चर्चा को तूल बना कर यहिया खान के पास गया और खूब बढ़ा-चढ़ाकर उनकी निंदा करते हुए कहा कि नौजवान ने इसलाम की तौहीन की है। यहिया खान ने भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज सिंघ को कचहरी में पेश होने का हुक्म सुना दिया। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

*सुबेग सिंघ फड़ जंबरो मंगाया।*
*तिसका बेटा साथ फड़ाया।*

सबसे पहले तो इन दोनों को मुसलमान धर्म कबूल करने को कहा गया, जिसके उत्तर में भाई शाहबाज सिंघ ने कहा, *"जैसे तुमै दीन है पयारा। तैसे ही है धरम हमारा।"* तब उन्हें कई प्रकार के लालच दिए गए ज़मीन-जायदाद, धन-दौलत के, लेकिन वे नहीं माने :

*कहयो नवाब तुम आवो दीन*
*लेवो दाम औ काम औ ज़मीन।*
*नही तो मरनो कर मनजूर*
*चड़ो चरख गिर होवो चूर ॥७॥*

पिता-पुत्र दोनों ने कहा कि मौत का हमें कोई खौफ नहीं है। मरना तो एक दिन है ही। धर्म तबदील करके भी मृत्यु तो आनी ही आनी है, तुर्क बनने से मौत से बचेंगे थोड़े ही :

*तुरक भए जे मरै न कबही तौ हम तुरक बनैहैं।*
*मौत रहे जे तहि भी सिर पर तो किउं धरम तजै हैं।*

ज्ञानी गिआन सिंघ 'तवारीख गुरू खालसा' में लिखते हैं कि भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाने से पहले अनेक प्रकार के कष्ट दिए गए। उन्हें नंगी पीठ पर कोड़े मारे गए। नंगा करके उलटा लटका दिया गया। उनके केश ऊपर बांध दिए गए। चाबुक मार-मार उनकी चमड़ी उधेड़ दी गई। दोनों पिता-पुत्र टस से मस नहीं हुए। अकाल-अकाल का सिमरन करते-करते कष्ट सहते रहे। यह देख यहिया खान अत्यंत क्रोध में आ गया और उसने दोनों को बारी-बारी चरखड़ी पर चढ़ाकर घुमा देने का हुक्म दिया। दोनों को चरखड़ी पर चढ़ाया गया। चरखड़ी खूब घुमाई गई। दोनों प्रभु-नाम-सिमरन करते रहे :

*उचे चाढ़ फिर बहुत घुमाया।*
*वाहिगुरू तिन्ह नाहि भुलाया।*
*जयों जयों मुख ते गुरू उचारे।*
*अकाल अकाल कर ऊच पुकारे ॥ (पंथ प्रकाश)*

फिर दोनों को अलग-अलग ले जाकर समझाने का यत्न किया गया। भाई शाहबाज सिंघ को मौलवी ने कहा कि तुम अभी बालक हो। पढ़े-लिखे हो, अरबी-फारसी का ज्ञान रखते हो। तुम्हारे पिता ने तो उम्र भोग ली है। तुम्हारी खाने-पीने, मौज-मस्ती करने की उम्र है, इसलिए

Final

दीन कबूल कर लो, हठ छोड़ दो :

*दीन मुहंमदी कर कबूल तू सरदारी बड पाहैं।*
*तूं तो पढयो फारसी अरबी बुधीवान दिसैहैं।*
*अभि नवेस कालेस एहु हठ छोड़ किउं न सुख लैहैं।*
*खाइ पैन लिय पिदर तुमारे बूढा मरनो चैहैं।*
*खाण पीण दी उमर तुमारी तू किउं जिंदड़ी दैहैं।*
*मजब धरम पर मूरख मरहैं चत्रन मरते को हैं।*
*(पंथ प्रकाश)*

भाई सुबेग सिंघ से कहा गया कि इसलाम कबूल कर लो, वंश बचा लो। पुत्रों से ही वंश चलता है। कुल का नाश क्यों कर रहे हो? भाई साहिब ने जवाब दिया कि हमारे गुरु साहिब ने अपने चारों सुपुत्र धर्म पर कुर्बान कर दिए, सरवंश वार दिया। मैं अपनी कुल बचा लूं, इसमें कौन-सा बढ़प्पन है? मैंने अपने पुत्र को गुरु की सीख दी है। वह मौत से नहीं डरता। मरना, रखना प्रभु के हाथ में है। ज़िंदगी से ज्यादा हमें धर्म प्यारा है। धर्म गंवा कर जीने का क्या महत्त्व है?

*सिखन काज सु गुरु हमारे।*
*सीस दीओ निज सन परवारै।*
*चार पुतर जान कुहाए। सो दंडी की भेंट कराए।*
*हम कारन गुर कुलहि गवाई।*
*हम कुल राखै कौण बडाई ॥२८॥ (पंथ प्रकाश)*

इसके बाद यह निश्चय किया गया कि पहले भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ा कर पीस दिया जाए। हो सकता है, पुत्र का दुख आंखों के सामने देख भाई सुबेग सिंघ इसलाम कबूल कर लें। भाई शाहबाज़ सिंघ चरखड़ी पर चढ़े, ऊंचे-ऊंचे स्वर में वाहिगुरु का सिमरन करते रहे। बीच में शरीर कुछ बलहीन हो जाने पर आवाज़ धीमी पड़ी तो जल्लाद ने समझा, इन्होंने इसलाम कबूल कर लिया है। इस पर चरखड़ी रोक दी। पिता ने पुत्र की ओर देखा। पिता की आंखों में शहीद होने का सुरूर तथा, नूरो-नूर चोहरा देख भाई शाहबाज सिंघ ने जोरदार आवाज़ में जैकारा गुंजाया। सारा माहौल गूंज उठा। यहिया खान, मौलवी, जल्लाद अत्यंत क्रोधित हो उठे। उन्होंने पिता-पुत्र दोनों को चरखड़ियों पर चढ़ा ज़ोर-ज़ोर से चरखड़ी चलानी शुरू की। वाहिगुरु का सिमरन करते दोनों पिता-पुत्र— भाई सुबेग सिंघ, भाई शाहबाज सिंघ शहीद हो गुरु-चरणों में जा विराजमान हुए। १७४५ ई में निर्भयता, अडोलता का उदाहरण प्रस्तुत कर सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाते हुए दोनों महान शहीद धन्य हुए। संभवत: वे यही कह रहे थे :

*सुबेग सिंघ तब कुरनश करी।*
*धंन चरखड़ी धंन यह घरी ॥८॥*
*चाढ़ चरखड़ी हमैं गिरावो।*
*सो अब हम को ढील न लावो ।*
*हम तो गुर के सिख सदावै।*
*गुर के हेत प्रण भल जावैं ॥९॥*
*(श्री गुर पंथ प्रकाश)*

गुरु के लाडले सिक्ख इसी तरह चरखड़ियों पर चढ़ते, बंद-बंद कटवाते, आरों से चिरते हुए चढ़दी कला की अनूठी स्पिरिट से आगे बढ़ते गए। विश्व-इतिहास में अपना अनूठा, अनोखा, विलक्षण स्थान बनाते हुए आज विश्व स्तर पर देदीप्यमान सितारे की तरह चमक रहे हैं। वर्तमान समय के प्रमुख इतिहासकार धर्म-विशेषज्ञ प्रो आरनोल्ड टाइनबी के अनुसार :-

"They are the burliestman on the face of the planet though and capable. If human life survives in the present chapter of man's history the Sikhs, for sure will still be on the map."

(सिक्ख इस ग्रह अर्थात् धरती पर बस रहे सबसे अधिक ताकतवर मानव हैं, हठीले और समर्थ। यदि वर्तमान मानव इतिहास के दौर में मनुष्य जीवित बचा तो सिक्ख यकीनन विश्व-नक्शे में शामिल नज़र आएगा।)

Final

# धर्म माता-पिता की गोद में खेलता है

*-प्रिं नरिंदर सिंघ 'सोच' (दिवंगत)*

*(प्रिंसीपल नरिंदर सिंघ 'सोच' सिक्ख जगत के पाठकों के लिए किसी पहचान के मुहताज नहीं हैं। उनकी रचनाओं में नितांत गहराई तथा भाषा में सरलता है और लेखन-शैली की अमीरी पाठकों की चेतना को अंदर तक स्पर्श करती है। प्रिंसीपल साहिब का 'गुरमति प्रकाश' (पंजाबी-मासिक) के अगस्त १९६७ तथा अगस्त २०१६ अंक में प्रकाशित हुआ यह आलेख 'गुरमति ज्ञान' में प्रकाशित करने की खुशी ले रहे हैं। इस आलेख में कनाडा से आए एक दंपती को लेखक दंपती अपने घर बुलाता है। वे आपस में बातचीत करते हैं। --संपादक)*

. . . बातें चल रही थीं कि उनकी पंद्रह महीने की बच्ची खेल छोड़ कर दूध जैसा सफेद कपड़ा उठाकर ले आई। बीबी कौर ने अपनी घड़ी की तरफ देखा और कहा, "मेरी घड़ी से मेरी बच्ची की घड़ी का टाइम हमेशा ठीक रहता है। अब आठ बज गए हैं और यह अपना कपड़ा लेकर सोने के लिए आ गई है। मुझे इस तरह प्रतीत होता है, जैसे इस कपड़े में नींद की गठरी बंधी हुई है।"

बीबी कौर ने अपनी बच्ची के दिन के कपड़े उतार कर रात के (खुले) कपड़े पहना दिए। सरिये के जंगले वाली पलंगड़ी पर सफेद बिछाई कर दी गई। उसे दोहरे कपड़े का लंगोट-सा बांध दिया और दूध की बोतल उसके मुंह में लगा दी। मां ने अपनी बेटी की नींद के लिए 'सोहिला साहिब' का पाठ किया। इधर 'सोहिला साहिब' के पाठ का भोग पड़ा (संपूर्ण हुआ), उधर बोतल का दूध खत्म हो गया। मां ने दूध के साथ-साथ 'सोहिला साहिब' का पाठ सुनाया। पंद्रह महीने की बच्ची ने अपनी मां से दूध पीया और साथ-साथ पाठ को ध्यान से सुना। मुझे ऐसे लगा जैसे मां ने अपनी बेटी के चारों तरफ एक और सुरक्षा का सुनहरी जंगला खड़ा कर दिया हो; जैसे कूंज ने लंबी उड़ान भरने से पहले अपने अंडों को सायबेरिया की गर्म बर्फ की तह में छिपा दिया हो; जैसे मादा कछुआ ने अपने अंडे बाहर धरती पर रख कर नदी में जाने की तैयारी कर ली हो; जैसे प्रह्लाद भक्त को यकीन दिलाने के लिए कुम्हारिन ने बिल्ली के छोटे-छोटे बच्चे जलते आवे में 'प्रभु रक्षक' कह कर छोड़ दिए हों। बीबी कौर ने ममतामयी हृदय से अरदास की। बीबी कौर की पंद्रह महीने की बच्ची ने अरदास सुनी। बीबी कौर ने बच्ची को हाथ जोड़ कर 'सति श्री अकाल' बुलाई। बच्ची ने हाथ जोड़ कर 'सति श्री अकाल' का उत्तर दिया।

हमें बीबी कौर ने उठने का इशारा किया। हम दोनों उठ कर कमरे से बाहर आ गए। बाहर आकर उसने धीरे से दरवाज़ बंद कर दिया। दरवाज़े के बंद होने से बीबी कौर की पंद्रह महीने की छोटी-सी बच्ची ने नींद से भरी हुई पलकों को बंद कर दिया। 'सोहिला साहिब' की गोद में पंद्रह महीने की बच्ची की पवित्र आत्मा सो गई। आज उसकी रात की नींद की चार सौ पचपनवी बारी थी। वह बच्ची जन्म से लेकर आज तक रात को अपनी मां की गोद में नहीं सोई, बल्कि मां ने हमेशा

Final

(अपनी गोद से बहुत ऊंची) 'सोहिला साहिब' की गोद में अपनी बच्ची को सुलाया था।

यह बच्ची प्रातः काल अपनी घड़ी के अनुसार सात बजे जाग जाएगी, अपनी ओदने वाली दूध जैसी सफेद चादर को पैर मार कर दूर फेंक देगी, जैसे सूरज रात को दूर फेंक देता है। बीबी कौर की बच्ची चादर को ऊपर नहीं ले सकती। वह केवल उससे मुंह छिपा लेती है या छोड़ देती है।

बच्ची के आसमानी रंग के कमरे में एक धीमा-सा बल्ब जलता रहता है। बच्ची जब कभी जागती है, वह बल्ब की तरफ देखती है। उसका वही चांद है, वही सूरज है, उसी एक की अनेक ऋतुएं हैं। वह देखते-देखते फिर सो जाती है, क्योंकि उसकी घड़ी पर अभी तक ठीक सात नहीं बजे। यह 'सोहिला साहिब' की करामात है।

मेरी पत्नी ने बहन कौर से कहा, "यह बहुत अच्छी बात है। इससे बच्चा किसी पर निर्भर होने की आदत से बच जाता है और अपनी मुश्किलों के साथ खुद ही लड़ने का सामर्थ्य पैदा कर लेता है।"

बीबी कौर हंस कर बोली, "बहन जी! यह बात मैंने आपसे ही सीखी है। आपने अपने छोटे लड़के को तारे दिखाई देने पर सोने की आदत डाल दी थी और जब वह तारे निकलते देखता था उसी समय 'तारे लटक गए' कह कर अंदर अंधेरे कमरे में जाकर अकेला सो जाता था। समय पर सोना और समय पर जागना लगातार सालों के अभ्यास का अमृत फल है।"

धर्म का भी बीज बोया जाता है; धर्म की भी कलम लगाई जाती है; धर्म की भी पौध उखाड़ कर खुली क्यारी में लगाई जाती है। कोई बीज धरती के बिना नहीं उगता, कोई फूल सूरज और चांद की किरणों के बिना नहीं खिलता, कोई भी कली अपने पोषक सूरज-किरणों के रंगों के बिना रंग नहीं सकती, कोई भी फूल धरती की गोदी के बिना सुगंध प्राप्त नहीं कर सकता। जब एक मां सेवा करती-करती बिना उफ किए चौंकी के नुकीले कील पैर की छत पर चुभोकर पानी को लहू-लुहान कर सकती है तो उसी की कोख को सफल-कर्त्ता गरम तवी पर बैठ सकता है और गर्म बालू सिर पर डलवा कर बिना उफ किए पाठ कर सकता है। जिनके इतिहास में स्त्रियां मंनू के भोरे में कैद रहती हैं, उनके घर में खोपड़ियां उतरवाने वाले, बंद-बंद कटवाने वाले और आरे से शरीर चिरवाने वाले पैदा होते हैं।

आज के मनोविज्ञानी मानते हैं कि पचानवे फीसदी मनुष्यों पर वातावरण का प्रभाव होता है। अगर विरसा नाम की कोई चीज़ है तो वह केवल पांच फीसदी होती है और वह भी ज्यादातर शारीरिक होती है। माता या पिता विरासत में बिल्ली जैसी आंखें या घुंगराले बाल तो पुत्र-पुत्रियों को दे सकते हैं, मगर बिल्ली जैसी आंख के साथ-साथ अपनी ज़िंदगी का दृष्टिकोण नहीं दे सकते। माता-पिता अपने बच्चों को धार्मिक वातावरण दे सकते हैं और इस काम के लिए माता-पिता समर्थ होते हैं।

सबसे पहली संस्था घर ही होता है, जहां बच्चों की आने वाली ज़िंदगी की नींव रखी जाती है। मेरे सामने एक गुरसिक्ख की तस्वीर सामने आई, जिनकी गोद में उनकी बिना मां की बच्ची होती थी और वे सर्दी की रातों में तीन बजे स्नान करके अकेले ही अपने घर कीर्तन करने बैठ जाते थे। उनके दाएं हाथ में एक तारा होता था और बाएं हाथ में खड़तालें। उनकी आवाज़ न सुरीली थी और न रसीली, परंतु उनके दिल

Final

में गुरबाणी-प्रेम की लहरों वाला दरिया बहता था। उनकी लय काफी तेज़ थी और वे सात-सवा सात बजे तक सारी 'आसा की वार' और 'सुखमनी साहिब' के कीर्तन का भोग डाल देते थे। वे कीर्तन करते-करते कुछ खास तुकों पर रुक जाते और उनको बार-बार दोहराते। मुझे इस तरह प्रतीत होता, जैसे वे अपने गुरु-पिता जी के साथ प्रेम-हठ कर रहे होते हैं और गुरु जी को उनके प्रेम-हठ के आगे अपने हथियार डालने पड़ते। अगर वे बाणी के द्वारा नाम की मांग करते तो उनको नाम मिल जाता। अगर वे दर्शन की मांग करते तो उनको प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते। अगर वे बख़्शिश की मांग करते तो उन पर गुरु-कृपा की बारिश होने लग जाती। अगर वे मलिन मन की शुद्धता की मांग करते तो मन पवित्र जल की तरह निर्मल हो जाता।

वे लगातार साठ वर्ष तक श्री गुरु रामदास जी के दरबार श्री दरबार साहिब के रोज़ दर्शन करते रहे। लगातार साठ वर्ष तक शाम को पांच परिक्रमा करते हुए 'रहरासि साहिब' का पाठ करते रहे। उनको रोटी से कई बार भूखे रहना पड़ा, परंतु उन्होंने कभी नित्तनेम में नागा नहीं किया। उनको कई बार प्यासे रहना पड़ा, परंतु वे हर महीने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ का खुद भोग डालते। यह भोग वे संक्रांति वाले दिन डालते थे, जिस दिन नए महीने का नाम (पाठ) सुनाया जाता था। साथ ही एक साधारण पाठ और रखा जाता था।

बहुत जल्दी उनकी लड़की ने उतना पाठ याद कर लिया, जितना उसके पिता जी को आता था। वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब का बिना नागा किए पाठ करने लग गई। अब उनके घर महीने बाद दो साधारण पाठों का भोग पड़ता। उनके पिता अपनी दुबली-पतली और छोटी उम्र की लड़की के लिए बाबा जी की एक छोटी 'बीड़' ले आए। उनकी लड़की अब बाबा जी का खुद प्रकाश करने लगी, खुद सुखासन करने लगी, खुद महीने बाद साधारण पाठ का भोग डालने लगी, प्रातः काल उठ कर त्रिपहरे जाने लगी, नित्तनेम के साथ छबील के बर्तनों की सेवा करने लगी।

परीक्षा का समय आया। गुरमुख प्यारे का लड़का कठिन पलों पर आ गया। अच्छी सेहत के लिए श्री अखंड पाठ साहिब प्रारंभ कर दिया गया। श्री अखंड पाठ साहिब मध्य में आ गया। गुरमुख प्यारा उठा और अरदास करने लगा। "सतिगुरु! हम कमज़ोर कलयुगी जीव हैं। अगर अभी कोई घटना घटित हो गई तो हो सकता है हम पूरे ध्यान से आप जी की सेवा न कर सकें, पाठ में पूरा मन न लगा सकें। आप अपनी संपूर्ण बाणी का पाठ सुन लो, फिर जो आपको अच्छा लगे कर लेना।" यह अरदास करके सिंघ जी ने गुरु को नमस्कार की।

जैसे दीया बुझता-बुझता बुझने से पहले एक बार फिर तेज होता है, वैसे ही लड़के में फिर जीवन-गति चल पड़ी। इस तरह लगता था, जैसे लड़का बीमार हुआ ही नहीं। सारे काम उत्साह के साथ होने लगे। सभी बधाइयां देने लगे, मगर गुरमुख प्यारे साधारण हूं-हां कर देते।

श्री अखंड पाठ साहिब का भोग पड़ा। रागियों ने बड़े उत्साह में आकर कीर्तन किया। दो दिन में सबका सामान वापिस भेज दिया गया। तीसरे दिन, जिसने सुपुत्र की रहमत प्रदान की थी, वह लेने आ गया।

गुरमुख प्यारे ने फिर अरदास की, "सतिगुरु जी! आप जी ने बहुत ही कृपा की है। जितने समय की मैंने मांग की थी, उससे भी दो दिन ज्यादा प्रदान किए हैं। श्री अखंड पाठ साहिब की निर्विघ्न समाप्ति की है और अब हम आपके

Final

हुक्म के बाद बच्चे की आत्मा के लिए साधारण पाठ रखेंगे।

अपने बच्चे को पिता बड़े उत्साह के साथ लेकर गया और सबसे कह दिया कि यह मेरा एकमात्र पुत्र है। मैं उसकी बारात लेकर जा रहा हूं। मुझे बधाई दो, परंतु मेरे साथ शोक की कोई बात न करो। विवाह के समय शोक की बातें करनी ठीक नहीं हैं।

जिस दिन इस गुरु प्यारे ने खुद प्रस्थान करना था, रात भर बेहोश पड़ा रहा। अमृत वेले उसकी नींद खुली और उसने अपनी लड़की से कहा, "त्रिपहरा हो गया है। जाओ अपने सतिगुरु का दर्शन करो।" लड़की सीढ़ियों के द्वारा दर्शन करने के लिए जा रही थी और उसके पिता जी आकाश-मार्ग के द्वारा सतिगुरु के चरणों में पहुंच रहे थे।

उनकी लड़की को दो बार पांच-सात सौ मील की दूरी पर श्री अमृतसर से जाना पड़ा। वे बहुत बार वाहिगुरु-वाहिगुरु कहते हुए सवा तीन बजे उठ जाते और जब उनको पूछा जाता, क्या बात है, तो वे चुप कर जाते। मज़बूर करने पर वे बता देते कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सवारी श्री हरिमंदर साहिब जा रही है और मेरे कानों में नरसिंघों की आवाज़ आ रही है, यह सुनो! पांच या सात सौ मील की दूरी कोई दूरी नहीं, जहां नरसिंघे की आवाज़ न जा सके। आठ-नौ सौ मील की दूरी कोई दूरी नहीं, जहां पड़े हुए बच्चे के पालने को हिलाया न जा सके।

दूर बैठ कर तराजू के बांट बदले जाते हैं; दूर बैठ कर आग बुझाई जाती है; दूर से जलती हुई भट्टी की आंच अनुभव की जा सकती है; दूर से किसी गुरसिक्ख के मुंह के द्वारा आम चूसा जा सकता है; दूर से तैयार की हुई पोशाक पहनी जा सकती है। शारीरिक पूजा से मानसिक पूजा की बाजुएं लंबी होती हैं।

महात्मा बुद्ध ने ठीक कहा था, "एक बुद्धों का खानदान है। मैं आपके राजाओं के खानदान में से नहीं हूं। मैं बुद्धों की पुरानी पीढ़ी में से हूं।" सिक्खी का भी एक अपना खानदान होता है।

सिक्खी का पौधा माता-पिता की गोद में जड़ लगा कर ऊपर उठता है। बीबी भानी जी ने माताओं का मार्गदर्शन किया है। इन्हीं माताओं के पास सच्ची लोरी है। इसी से माताएं अपने पुत्रों को सुपुत्र बना सकती हैं। इसी से माताएं अपने पुत्रों में सिमरन की अलख जगा सकती हैं। इसी से माताएं प्रीति का मार्ग बता सकती हैं। इसी से माताएं प्रभु के कपड़े पहन कर अपने बच्चों का नंगेज ढक सकती हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने जो लोरियां और आशीषें अपनी माता जी से सुनी थीं, वे राग गूजरी में वर्णन की हैं :

*जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि*
*पितरी होइ उधारो ॥*
*सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु*
*जा का अंतु न पारो ॥१॥*
*पूता माता की आसीस ॥*
*निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि*
*सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥*
*सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला*
*संतसंगि तेरी प्रीति ॥*
*कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥*
*अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु*
*हरि सिमरत अनद अनंता ॥*
*रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥*
*भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ*
*हरि चरणा होहु कउला ॥*
*नानक दासु उन संगि लपटाइओ*
*जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥ (पन्ना ४९६)*

Final

# विश्व-आध्यात्मिकता और शबद-गुरु सिद्धांत : गुरबाणी के संदर्भ में

-डॉ जोरावर सिंघ*

*प्रस्तावना :* संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे प्रकृति ने आध्यात्मिक जीवन जीने योग्य बनाया है। इसके अतिरिक्त अन्य प्राणी-मात्र भौतिक जीवन ही जी सकते हैं। मनुष्य की भौतिक क्रियाएं अन्य प्राणियों की भांति ही हैं। अध्यात्म के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है। आध्यात्मिक जीवन परमात्मशक्ति निहित आंतरिक चेतना द्वारा संचालित होता है और भौतिक पदार्थ, अमीरी-गरीबी आदि का यहां कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त मानव अपने शरीर, भावों, संवेगों तथा संकल्पों का भली प्रकार उपयोग कर सकता है। वह कठिनाइयों से घबराता नहीं, बल्कि उनसे ऊपर उठकर कुशलतापूर्वक उनका सामना करता है।

*आध्यात्मिकता :* गुरबाणी के अनुसार अपने असली स्वरूप को पहचानना ही आध्यात्मिकता है। इसका लक्ष्य है-- आत्म साक्षात्कार। हम आनंद स्वरूप हैं, किंतु मोह आसक्ति ने हमें इस प्रकार से जकड़ रखा है कि हम अपना वास्तविक स्वरूप ही भूल गए हैं :

*मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥*
*(पन्ना ४४१)*

भौतिकवाद से त्रस्त मानव के लिए अध्यात्म जीवन-पथ है। विषयासक्ति द्वारा भ्रमित होकर हमारा चित्त विकृत हो जाता है और विवेकहीनता के वशीभूत हम विनाश की ओर अग्रसर होते हैं। इसके विपरीत अध्यात्म जीवन का उन्नायक पथ है, जीवन का शुद्धीकरण है। जिस प्रकार आंख संपूर्ण विश्व को देखती है, लेकिन स्वयं को नहीं देख पाती, ठीक उसी प्रकार आत्मतत्व, आत्मनिरीक्षण व अनुभव की वस्तु है। स्वयं अंत:प्रेरणा से इसकी सिद्धि होती है। आध्यात्मिकता का संबंध किसी धर्म-विशेष, जाति अथवा क्षेत्र से नहीं है। आध्यात्मिकता विश्वव्यापी है; हर व्यक्ति के लिए एक समान है।

*आध्यात्मिक जीवन में गुरु का स्थान :* आध्यात्मिक जीवन में गुरु का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह बात पूर्णत: मानने योग्य है कि गुरु के बिना मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन का सफल होना असंभव है :

*मत को भरमि भुलै संसारि ॥*
*गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥ (पन्ना १३८)*

जिस प्रकार भूल-भुलैया वाली इमारत के अंदर जाने और वहां से सकुशल वापिस आने के लिए एक ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है जो उस इमारत के समस्त भेदों को अच्छी तरह जानता हो, उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन को सफल बनाने के लिए ऐसे आध्यात्मिक गुरु की जरूरत पड़ती है जो उसके रहस्यों से भली-भांति परिचित हो और साधक को उचित ज्ञान करा सके। गुरु के निर्देशन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। गुरु जीवन रूपी नाव के लिए मल्लाह भी है और पतवार भी। इस

* #२६ वशिष्ट पुरम, जानकी पुरम, साठ फिट रोड, लखनऊ (यू पी) फोन : +९१७००७२१५१२६

Final

मल्लाह और पतवार के अभाव में आध्यात्मिक जीवन की नाव सांसारिक भंवर में फंसकर डूब जाती है :

*बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ (पन्ना १३८)*

गुरु अपने ज्ञान एवं निर्देशन से सिक्ख के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश कर देता है। वह सिक्ख के भौतिक नेत्रों को खोलने के साथ ही उसके अंत:चक्षु में भी विराट ज्योति उत्पन्न कर देता है। ईश्वर क्या है, कहां है और उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है आदि प्रश्नों के उत्तर गुरु की कृपा द्वारा सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। गुरु के बिना संसार अंधकारमय है, चाहे अनगिनत सूर्य व चंद्रमा उदय होते रहें :

*जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हज़ार ॥*
*एते चानण होदिआ गुर बिनु घोर अंधार ॥*
*(पन्ना ४६३)*

यद्यपि जीव ब्रह्म (प्रभु) का ही अंश है तथापि भौतिकता के वशीभूत होकर वह आत्मस्थ चैतन्यस्वरूप परम प्रभु का साक्षात्कार नहीं कर पाता है। प्रभु-मिलाप में बाधक बने भौतिक आवरण को विच्छिन्न करने के लिए शक्तिशाली माध्यम की आवश्यकता होती है। यह शक्तिशाली माध्यम गुरु ही है।

*गुरबाणी के अनुसार 'शबद' (शब्द) :* गुरबाणी में 'शबद' को अत्यंत व्यापक रूप में लिया गया है। यहां 'शबद' अनादि है, नित्य है, सर्वव्यापी है, अविनाशी है और सृष्टि की उत्पत्ति का स्रोत है :

*--कीता पसाउ एको कवाउ ॥*
*तिस ते होए लख दरीआउ ॥ (पन्ना ३)*
*--उतपति परलउ सबदे होवै ॥*
*सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (पन्ना ११७)*

यह 'शबद' परमात्मा आप ही है, जिसे 'ओअंकार' कहा गया है। गुरबाणी में ओअंकार इस सर्वव्यापी 'शबद' को ही अभिव्यक्त करता है। जहां एक तरफ 'शबद' से सृष्टि की उत्पत्ति बताई गई है वहीं ओअंकार से भी इसकी उत्पत्ति का उल्लेख है :

*ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥*
*ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥*
*ओअंकारि सैल जुग भए ॥*
*ओअंकारि बेद निरमए ॥ (पन्ना ९२९)*

'शबद' हुक्म रूप में सारी सृष्टि के अंदर समाया हुआ है। वह नाम रूप में चारों दिशाओं में हर जगह विद्यमान है, कण-कण में व्याप्त है :

*चहुदिसि हुकमु वरतै प्रभु तेरा*
*चहुदिसि नाम पतालं ॥ (पन्ना १२७५)*

गुरबाणी में 'शबद' को अमृत कहा गया है। 'शबद' ही अमृत है। 'शबद' रूपी अमृत का प्रवाह निरंतर जारी है :

*--अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥*
*(पन्ना ६४४)*
*--झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा ॥*
*मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ (पन्ना १०२)*

'शबद' ज्योति-रूप है, जो अज्ञानता रूपी भय का खंडन कर देता है। जिस प्रकार अंधेरे में पड़ी रस्सी को सर्प समझ लेने से भय उत्पन्न होता है और प्रकाश द्वारा वास्तविक स्थिति की समझ आ जाने पर भय दूर हो जाता है, उसी प्रकार 'शबद' रूपी ज्योति के प्रकाश में अज्ञानता रूपी अंधेरे का भय दूर हो जाता है :

*सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥*
*(पन्ना ८४३)*

'शबद' गुरु भी है। 'शबद' रूपी गुरु के बिना अज्ञानता का अंधकार दूर नहीं हो सकता। गुरु के बिना जगत माया के प्रभाव से

Final

बौराया हुआ फिरता है :

*--सबदु गुरु सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)*

*--सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा*
*बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ (पन्ना ६३५)*

*शबद-गुरु :* श्री गुरु नानक देव जी का शबद-गुरु-सिद्धांत अन्य मतों की अपेक्षा भिन्न है। यहां शरीर गुरु नहीं है। वास्तव में ज्योति ही गुरु है। परमात्मज्योति का नाम 'नानक' है। श्री गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक एक ही गुरु-ज्योति विद्यमान रही है। वही गुरु-ज्योति अब श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में उपस्थित है। गुरबाणी में ज्योति की एकता की पुष्टि की गई है :

*--जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥*
*ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥*
*(पन्ना १४०८)*

*--जोति ओहा जुगति साइ*
*सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (पन्ना ९६६)*

समस्त गुरु साहिबान की बाणी में 'नानक' नाम की मुहर लगी है, जो गुरु-ज्योति की एकता का प्रमाण है। चूंकि गुरु-ज्योति अगम-अगोचर है, इसलिए जनसामान्य को उसका अनुभव नहीं हो सकता है। मानव-शरीर में प्रकाशित होकर गुरु-ज्योति इंद्रियगोचर बन जाती है। ज्योति उसी शरीर में प्रज्वलित होती है जो उसके योग्य होता है और जिस शरीर में गुरु-ज्योति प्रकाशित होती है वह शरीर भी गुरुमय हो जाता है। ऐसे शरीर तथा उसे जन्म देने वाले माता-पिता और उस कुल को धन्य कहा गया है :

*धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी*
*जिनि गुरू जणिआ माइ ॥ (पन्ना ३१०)*

श्री गुरु नानक देव जी का सिद्धांत अत्यंत व्यापक है। 'शबद' हुक्म रूप में हर जगह विद्यमान है :

*बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥*
*(पन्ना ९८२)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी अकथ्य की कथा है।

*निष्कर्ष :* सम्पूर्ण विचार में स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष निकल कर सामने आता है कि आध्यात्मिकता मानव जीवन का उन्नायक पथ है। परम तत्व की खोज ही इसका लक्ष्य है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु रूपी माध्यम की विशेष आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक मार्ग अत्यंत कठिन है। खंडे की धार से भी अधिक तेज व बाल से भी ज्यादा बारीक है यह मार्ग। इस पर चलने के लिए इसी मार्ग के अनुरूप बनना पड़ता है। इस मार्ग पर चलने के अनुकूल बनाने वाला माध्यम 'शबद-गुरु' है। 'शबद-गुरु' से अधिक उपयुक्त कोई अन्य माध्यम नहीं हो सकता।

Final

# सच की राह पर जूझने वालों को प्रोत्साहित करें

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

आज समाज की सबसे प्रमुख समस्या है लोगों में सच्चाई और ईमानदारी जैसे नैतिक, चारित्रिक उच्चादर्शों के प्रति कम होता रुझान। ऐसा मुख्यत: इसलिए है क्योंकि आज की परिस्थितियों ने मनुष्य के मनोमस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह बैठा दी है कि सत्य की राह पर चलने वालों को पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सच्चे लोगों को समाज प्राय: बेवकूफ कहता है।

इस समस्या का समाधान यही हो सकता है कि समाज सत्य मार्ग के ऐसे पथिकों को बेवकूफ न समझे, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित करे, भले ही सत्य का वह साधक सामाजिक सफलता के मापदंडों पर खरा न उतरता हो। यदि हम स्वयं सत्य की कठिन डगर पर चलने का साहस न कर सकें तो भी हमारा यही योगदान बहुत होगा कि हम इस राह के पथिकों को हतोत्साहित न करें। बहुत संभव है कि सम्मान प्रदर्शित करने से ऐसे सत्यमार्गियों की संख्या बढ़े और वे पथिक कठिनाइयों से जूझते हुए हमारे-आपके लिए सत्य की राह को सहज-सुगम बना दें। हमें संघर्ष के क्षणों में उनको संबल प्रदान करना चाहिए। हमें रोज़मर्रा की बातों में अनेक ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जब लोग बेईमानी से कमाए गए धन से अमीर बने लोगों का तो गुणगान करते हैं, उनके 'चरणों' में लोटते हैं, किंतु जो आदमी ऐसा न करके नैतिक मूल्यों का आदर करता है और अधिक पैसा नहीं कमा पाता, उसकी खिल्ली उड़ाकर उसे हेय दृष्टि से देखते हैं।

आगे से समाज का कोई भी व्यक्ति यदि किसी असफल व्यक्ति को उसकी ईमानदारी का उलाहना दे, तो यह अवश्य जान ले कि उसने (उलाहना देने वाले ने) स्वयं तो कायर बनकर भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था से समझौता कर ही लिया है, सच्चाई की राह पर जूझने वाले साहसी पथिकों को हतोत्साहित करके वह और भी बड़ा पाप कर रहा है। हमारे कर्म ही नहीं, हमारे विचार और दृष्टिकोण भी समाज को प्रभावित करते हैं।

*कर्म और फल :* कर्म की गति को यूं ही गहन नहीं कहा गया है। यदि हम अपने कर्म के सापेक्ष फल की तत्काल कामना करेंगे तो कर्म की गहन गति के कारण हमें भ्रम होगा कि हमने कर्म तो ऐसा किया था, फिर फल विपरीत क्यों निकला? हमें मानना होगा कि हर कर्म का फल तत्काल प्राप्त नहीं होता और न ही हमें मिला फल तत्काल किए गए कर्म का परिणाम है। वास्तव में कर्म और उसके फल का हिसाब-किताब आगे-पीछे, यहां तक कि जन्म-जन्मांतर तक भी चलता रहता है, यही तार्किक है।

वास्तव में यदि हम ईश्वर को न्यायी मानते हैं तो हमें यह भी मानना चाहिए कि हमें हमारे अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा फल आज नहीं तो कल अवश्य मिलेगा।

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ प्र), फोन : ९४११६०७६७२*

Final

यदि हम यह मानने लगें कि आजकल तो भ्रष्ट आदमी ही मजे कर रहा है और सदाचारी व्यक्ति कष्ट पा रहा है तो ऐसा मानने का अर्थ यह है कि हम ईश्वर को नहीं मानते। ईश्वर की न्यायप्रियता में अविश्वास मूलत: ईश्वर में अविश्वास है, नास्तिकता है। वास्तव में हम सभी विचारों व मान्यताओं से नास्तिक हो चुके हैं। पूजा-स्थलों पर बाहरी पूजा-आडंबरों का प्रदर्शन करके हम अपने आस्तिक होने का छदम दिखावा-मात्र करते हैं।

*पर्वों में दिखावा :* आधुनिक समय में लोगों का ध्यान पर्व-विशेष की व्यवस्था, ऊपरी साज-सज्जा, लेन-देन आदि बाहरी आडंबरों में इतना अधिक लगा रहता है कि वे पर्वों के मूल तत्व व भाव पर ध्यान एकाग्र ही नहीं कर पाते, ठीक वैसे ही जिस प्रकार कोई व्यक्ति शरीर को तो खूब सजाए-संवारे, किंतु आत्मा पर विशेष ध्यान न दे। ऊपरी प्रबंध-व्यवस्था के दुरुस्त होने पर ही वे मन में मान लेते हैं कि आज त्योहार बहुत अच्छी तरह मनाया गया।

वास्तव में पर्वादि में सर्वाधिक महत्त्व है भाव का, जिसके कारण पर्व को मनाना सार्थक है। यदि मूल भाव प्रधान न होकर गौण रह जाए, तो पर्व मनाने, न मनाने से क्या फर्क पड़ता है? हम देखते हैं कि प्राय: पर्व को मनाते समय लोगों को उसकी पृष्ठभूमि का भी ठीक-ठीक पता नहीं होता। यदि हम पर्व को सार्थक रूप से मनाना चाहते तो हमें यह जानने की जिज्ञासा अवश्य होती कि इस पर्व को क्यों मनाया जाता है? इसका महत्त्व क्या है वर्तमान समय में? तभी हम पर्व की मूल भावना से तादात्म्य स्थापित कर पायेंगे। भौतिक उपभोक्तावाद की चकाचौंध ने हमारी तथाकथित आधुनिक, लेकिन वास्तव में विकृत हो चुकी सोच को जकड़ कर पर्वों को भी फैशनपरस्त, धन-बल के प्रदर्शन, सरलता से कोसों दूर कृत्रिम भावनाओं के आदान-प्रदान का अवसर बनाकर रख दिया है।

*शिक्षित-अशिक्षित में अंतर :* आज जब लोग स्वयं को शिक्षित कहते हैं तो उन्हें पहले थोड़ा सोच-विचार कर लेना चाहिए। मसलन, हमने प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ा है कि कभी नष्ट न होने वाली प्लास्टिक के उपयोग से कभी न नष्ट होने वाला कूड़ा बढ़ता है, तो क्या हमने पॉलीथीन की पन्नियों में सब्ज़ी आदि लाना छोड़ दिया? हमने पढ़ा था कि बारूद के धुएं से प्रदूषण बढ़ता है तो क्या हमने अपने त्योहारों/उत्सवों पर मात्र क्षणिक मनोरंजन हेतु आतिशबाजी आदि करना छोड़ दिया? हमने यह भी पढ़ा है कि तीव्र ध्वनि प्रदूषण हमारी-श्रवण शक्ति व तंत्रिका-तंत्र पर दुष्प्रभाव डालता है, फिर भी हम अपने वाहनों के कर्कश हॉर्न का बेझिझक प्रयोग करते हैं तथा धार्मिक-सामाजिक अवसरों पर धड़ल्ले से तीव्रतम आवाज़ में लाउडस्पीकर आदि ध्वनि-विस्तारक यंत्रों का इस्तेमाल करते हैं। गुटखा, तंबाकू, सिगरेट, शराब आदि के नकारात्मक प्रभावों से भली-भांति परिचित होने के बावजूद तथाकथित शिक्षित लोग बड़ी मात्रा में इनका सेवन करते हैं।

यदि शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान को अमल में न लाया जाए तो हमें शिक्षित कहलाने का क्या अधिकार है? यदि हमें अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों की थोड़ी-सी भी परवाह है तो हमें उपरोक्त तथा ऐसी ही अन्य बातों की ओर गंभीर दृष्टि अवश्य डालनी चाहिए, अन्यथा आगे से स्वयं को शिक्षित कहने से पहले विचार कर लें कि हम केवल नाम के ही शिक्षित हैं या काम के भी।

Final

# सिक्ख पंथ में स्त्री की श्रेष्ठ महत्ता

*-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ**

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जिसके बिना सृष्टि का प्रसार नहीं हो सकता उसे निर्बल और निम्न मान लिया गया था। पुरुष घर और समाज का कर्त्ता, नियंता बन बैठा था और स्त्री को सेविका, दासी एवं भोग-विलास की वस्तु समझ लिया गया था। सदियों से चली आ रही इस सोच ने स्त्री की स्थिति इतनी दयनीय बना दी थी कि घोर प्रताड़नायें भी वह मूक बन कर सहने को विवश थी। गुरु साहिबान ने इस सोच पर कड़े प्रहार करते हुए स्त्री को समाज में उसके बहुमूल्य योगदान के अनुरूप सम्मानजनक और बराबरी का स्थान दिलाया। यह अत्यंत कठिन था, किंतु गुरु साहिबान ने इसे संभव कर दिखाया। सिक्ख धर्म की चर्चा श्री गुरु नानक साहिब से आरंभ होती है और श्री गुरु नानक साहिब का ध्यान करते ही सोच सर्वप्रथम बेबे नानकी जी की ओर चली जाती है। वे श्री गुरु नानक साहिब की बड़ी बहन थे और उनसे आयु में लगभग पांच वर्ष बड़े थे। श्री गुरु नानक साहिब के जीवन में बेबे नानकी जी की भूमिका बहन के अलावा सहयोगी, पालक, वैचारिक, आध्यात्मिक निकटस्थ और गुरु साहिब व संसार के मध्य सेतु के रूप में भी दिखाई देती है। श्री गुरु नानक साहिब में ईश्वरीय स्वरूप के दर्शन सबसे पहले बेबे नानकी जी ने किए थे। गुरु साहिब ने भी जीवन भर बेबे नानकी जी की हर इच्छा का सम्मान किया और उन्हें कभी निराश नहीं किया। सिक्ख धर्म में स्त्री-सम्मान की नींव यहीं से पड़नी आरंभ हो गई थी। श्री गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी में भी स्त्री को जन्मदायिनी मानते हुए कहा कि वह गृहस्थ आश्रम की सफलता के लिए बराबर की सच्ची सहयोगी है और उसी के कारण यह संसार चल रहा है :

*भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ (पन्ना ४७३)*

स्त्री के सम्मान और महत्त्व के पक्ष में श्री गुरु नानक साहिब का यह सबसे सशक्त तर्क था कि जिसके बिना गृहस्थी नहीं चल सकती और संसार का सिलसिला जारी नहीं रह सकता, उसकी उपेक्षा और प्रताड़ना क्यों? श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि स्त्री के कारण ही समाज में संयम और मर्यादा बनी हुई है :

*भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥*
*(पन्ना ४७३)*

इसका शाब्दिक अर्थ था कि यदि किसी की स्त्री की मृत्यु हो जाए तो उसे दूसरा विवाह कर लेना चाहिए। इसका भाव था कि यदि घर, समाज में स्त्री का निरादर हो रहा है तो उसे बंद करना चाहिए और स्त्री को समान स्तर का स्थान देने में कोई विलंब नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके बिना परिवार और समाज का संगठन व सुव्यवस्था संभव नहीं है। गुरु साहिब ने स्त्री को जीवन की मर्यादा का प्रतीक बताया। यही कारण था कि जिस गृहस्थ आश्रम को धर्म और अध्यात्म के जगत में बड़े घिनौने

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३*

Final

रूप में देखा जा रहा था गुरु साहिबान ने स्वयं भी उस गृहस्थ आश्रम का पालन किया और संसार को भी इसके लिए उपदेश दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने स्त्री को ईमान कहा था। श्री गुरु नानक साहिब ने वचन किए कि संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जिसका जीवन स्त्री के बिना चलता हो। परमात्मा ही है जो इस अनिवार्यता से मुक्त है-- *"नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥"* श्री गुरु नानक साहिब ने समाज में स्त्री के महत्त्वपूर्ण स्थान को सशक्त वैचारिक दृष्टि ही प्रदान नहीं की, उसे सामाजिक व्यवहार में भी उतारने का उपकार किया। उन्होंने स्त्री के प्रति प्रेम व समर्पण को शिखर पर ले जाते हुए उसे भक्ति के मार्ग के रूप में देखा। गुरु साहिब ने वचन किए कि संसार में सभी नारियां हैं। पुरुष तो केवल एक है-- परमात्मा। परमात्मा को पाना है तो उस सुहागिन स्त्री की तरह बनना होगा, जिसने अपने पति का प्रेम प्राप्त कर लिया है :

*जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥*
*(पन्ना १७)*

एक सुहागिन स्त्री के अंदर पति का प्रेम और विश्वास जीतने के जो गुण हैं वे इतने महान हैं कि यदि उन गुणों को कोई मनुष्य धारण कर ले तो परमात्मा की कृपा पा सकता है। इस तरह श्री गुरु नानक साहिब ने स्त्री को समाज चलाने, आगे बढ़ाने वाली और मनुष्य की सहयोगी शक्ति के रूप में ही नहीं, प्रेरणा-स्रोत के रूप में भी देखा। स्त्री में सहजता, संतोष और प्रेम आदि जो अमूल्य गुण हैं वे मनुष्यों में कम हैं-- *"सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥"* इन गुणों के बिना परमात्मा को नहीं पाया जा सकता। सिक्ख इतिहास में अनेक स्त्रियां आदर्श नायक बन कर उभरीं जिन्हें सदा सम्मान से याद किया जाता रहेगा। आज जब भी लंगर-सेवा की बात चलती है तो श्री गुरु अंगद साहिब की सुपत्नी माता खीवी जी का नाम सबसे पहले बड़े आदर के साथ लिया जाता है। यहां तक कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी उनके गुणों और सेवा का उल्लेख मिलता है :

*बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥*
*(पन्ना ९६७)*

माता खीवी जी का व्यक्तित्व व व्यवहार नितांत सज्जनता भरा था। उनके दर्शन कर संगत को ऐसे आनंद का अनुभव होता था, जैसे कड़ी धूप में तप कर आए किसी लंबी राह के राही को पेड़ की घनी व शीतल छांव मिल जाए। माता जी स्वयं अपनी देखरेख में घी से बनी हुई मीठी खीर तैयार करवाते और लंगर में परोसते थे जो उनके मीठे स्वभाव का प्रतीक बन गई थी। श्री गुरु नानक साहिब के काल से ही स्त्रियां आगे आकर पुरुषों के समकक्ष धर्म और सेवा के कार्य करने लगी थीं। पुरुष और स्त्री में कोई भेदभाव, कोई वर्जना नहीं थी। जो स्त्रियां स्वयं को घर की चारदीवारी में सीमित रखती थीं वे घर से बाहर निकल कर गुरु साहिब के दरबार में आने लगीं और नाम जपने लगीं। उनके लिए बहुत-सी सीमायें तय कर दी गई थीं। वे स्वयं को पर्दे में ढक कर रखने, लंबा घूंघट करने, विधवा जीवन व्यतीत करने व सती हो जाने को विवश की जाती थीं। गुरु साहिबान ने संसार को ज्ञान का प्रकाश दिया कि सांसारिक संबंध संयोग और व्यवहार के हैं, जिनमें किसी न किसी तरह का हित बंधा हुआ है। जब यह हित पूरा नहीं होता अथवा तन से प्राण निकलते हैं तो पल भर में सारे संबंध टूट जाते हैं। गुरु साहिबान ने

Final

उपदेश दिया कि सच्चा और कभी न टूटने वाला संबंध परमात्मा से है। परमात्मा ही माता-पिता है--- *"नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥"* परमात्मा ही सखा है, भाई है। परमात्मा ही पति है--- *"सभ कामणि तिआगी प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥"* श्री गुरु अमरदास जी ने कई विधवाओं के पुनर्विवाह कराए, स्त्रियों को सती-प्रथा के विरुद्ध जागरूक किया। उन्होंने वचन किए कि सती की परिभाषा ही गलत समझी और की जा रही है। पति की चिता के साथ जल मरना सतीत्व नहीं है :

*सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि ॥*
*नानक सतीआ जाणीअनि जि बिरहे चोट मरंनि ॥*
*(पन्ना ७८७)*

श्री गुरु अमरदास जी ने वचन किए कि वास्तव में सतीत्व मन में परमात्मा की प्रीति और वैराग्य का जन्म लेना है। गुरु साहिब ने यह भी कहा कि संयम, संतोष आदि गुणों का धारण करना भी सतीत्व का प्रतीक है--- *"भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंनि ॥"* उनके दरबार में स्त्रियां बिना घूंघट के आती थीं और आत्मिक उन्नयन के साथ ही स्वावलंबन का पाठ भी पढ़ती थीं। घूंघट के साथ जहां परिवार की मर्यादा को जोड़ दिया गया था, वहीं सती-प्रथा को भी महिमामंडित कर दिया गया था। भ्रमवश स्त्रियां स्वयं इन प्रथाओं का पूरे मनोयोग से पालन किया करती थीं। गुरु साहिबान ने उन्हें इस भ्रम से निकाला जो अत्यंत कठिन कार्य था :

*सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु आपारु ॥*
*(पन्ना ३१)*

श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि स्त्री की शोभा उसके मन में परमात्मा के प्रति प्रेम की गहराई से बनती है। यही बात पुरुष पर भी लागू हुई, क्योंकि गुरु साहिबान का सभी के लिए उपदेश सुहागिन स्त्री की भांति परमात्मा से प्रेम करने का था। इससे स्त्री और पुरुष के मध्य के सारे भेद मिट गए। स्त्रियां जहां भक्ति का आदर्श बनीं, वहीं वीरता का भी पर्याय बन कर उभरीं, जिस पर एकमात्र पुरुषों का एकाधिकार माना जाता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब खालसा की साजना की, बड़ी संख्या में स्त्रियां अमृत छकने के लिए आगे आईं। उन्हें राजसी गौरव प्रदान करने के लिए 'कौर' की उपाधि से विभूषित किया गया। आज सभी सिक्ख स्त्रियों का अपने नाम के आगे 'कौर' लगाना सिक्ख पंथ में स्त्रियों के राजसी स्थान का प्रतीक है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खंडे-बाटे के अमृत की पाहुल ने स्त्रियों की सदियों से स्थापित दुर्बल की छवि को पल भर में ध्वस्त कर दिया। स्त्रियों ने जहां पुरुषों के साथ बैठ बिना किसी भेदभाव के अमृत-पान किया वहीं वीरता को भी समान भाव से धारण किया। वे पांच ककार सजाकर निर्भय हो समाज में विचरने लगीं।

एक बार पंजाब के माझा इलाके की सिक्ख संगत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन करने के लिए श्री अनंदपुर साहिब जा रही थी। रास्ते में एक गांव के निकट पहुंच कर संगत कुएं पर विश्राम के लिए रुक गई, किंतु संगत के साथ चल रही एक युवा सिंघनी बीबी दीप कौर वहां नहीं रुकी। बीबी दीप कौर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन के लिए इतनी उत्साहित थीं कि अकेले ही आगे बढ़ती गईं। वे थोड़ी ही दूर गई थीं कि रास्ते में चार मुस्लिम लुटेरों ने उन्हें अकेले जाते देखा। यह एकदम सुनसान जगह थी और दूर-दूर तक कोई

Final

सुनने-देखने वाला नहीं था। उन लुटेरों ने बीबी दीप कौर को दुर्बल स्त्री और अकेले जान कर घेर लिया। उन्हें यह प्रतीति ही नहीं थी कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खंडे-बाटे के अमृत ने दुर्बल को बलवान ही नहीं, वीर और पराक्रमी भी बना दिया है। उन्हें देख कर बिना घबराए बीबी दीप कौर ने अपनी कलाई में पहना सोने का कड़ा उतार कर ज़मीन पर फेंक दिया। एक लुटेरा जैसे ही सोने के कड़े को उठाने के लिए झुका। बीबी दीप कौर ने पलक झपकते ही कमर से कृपाण निकाल उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। यह देखते ही बाकी के तीन लुटेरे घबरा गए। उन्होंने ऐसी स्थिति के बारे में सोचा तक नहीं था। बीबी दीप कौर ने बिना समय गंवाये दो अन्य लुटेरों को भी तत्काल ही मार गिराया। चौथा लुटेरा जब भागने लगा तो बीबी जी ने उसे भी दबोच कर गिरा लिया और कृपाण सीधे उसके सीने में घोंप दी। इतने में पीछे रुकी संगत भी आ पहुंची और बीबी जी की वीरता देखकर चकित रह गई। संगत जब श्री अनंदपुर साहिब पहुंची और गुरु साहिब को बीबी दीप कौर की वीरता के बारे में बताया तो वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें आशीर्वाद दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का यह आशीर्वाद बीबी दीप कौर के लिए ही नहीं, समूचे स्त्री समाज के लिए था। स्त्री जब सभी गुणों से परिपूर्ण होती है तभी वह अपने परिवार और समाज को आगे बढ़ा सकती है :

*सभ परवारै माहि सरेसट ॥*
*मती देवी देवर जेसट ॥ (पन्ना ३७१)*

अभी तक यह भ्रम था कि पुरुष ही परिवार और समाज का नेतृत्व कर सकता है, मार्गदर्शक बन सकता है, गुरु साहिबान के बताये मार्ग पर चलते हुए सिक्ख स्त्रियों ने अपनी नेतृत्व-योग्यता को भी प्रमाणित कर दिखाया। ज़िला तरनतारन के गांव झबाल में जन्म लेने वाली माता भाग कौर इसका विलक्षण उदाहरण हैं। उन्होंने बाल्य-काल में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन किए थे और बाद में जब सन् १६९९ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की साजना की, उस अवसर पर भी वे वहां अपने परिवार के साथ उपस्थित थीं। उनमें सिक्ख पंथ के संस्कार पूरी तरह परिपक्व हुए थे। वहां माता भाग कौर ने भी अमृत-पान किया था। उनका विवाह गांव पट्टी के स. निधान सिंघ के साथ होने का उल्लेख मिलता है। वे और उनके पति दोनों ही गुरु-घर के अनन्य आस्थावान थे। जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लंबे युद्धों के बाद मुगलों द्वारा कुरान की कसम खाने पर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा तो चालीस सिक्ख उनसे विमुख होकर अपने गांव चले गए। जब बाद में माता भाग कौर को गुरु साहिब के चारों साहिबज़ादों तथा माता गुजरी जी की शहादत और सिक्खों के बलिदानों के बारे में पता चला तो वे व्यथित हो गईं। उन्होंने गुरु साहिब का साथ छोड़ कर आए सिक्खों की भारी लानत-मलानत की और उनके विवेक को झिंझोड़ कर गलती का एहसास कराया। वे तुरंत सशस्त्र हो सिक्खों के साथ गुरु साहिब का साथ देने के लिए निकल पड़ीं। उधर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माछीवाड़े से आगे बढ़ते हुए खिदराणे की ओर जा रहे थे, तभी सरहिंद के नवाब वज़ीर खान ने उन्हें घेरने के लिए फौज भेज दी। खिदराणे की ढाब पर गुरु साहिब और मुगल फौज में भारी युद्ध हुआ। इसमें भाग लेने के लिए माता भाग कौर के नेतृत्व में सिक्खों का जत्था पहुंच चुका था। इस युद्ध में गुरु साहिब की जीत हुई और मुगल सेना मैदान छोड़ कर भाग गई।

Final

माता जी के साथ आए सभी चालीस सिक्ख शहीद हो गये। युद्ध समाप्त होने के बाद माता भाग कौर घायल होकर अचेत अवस्था में गुरु साहिब से मिलीं। गुरु साहिब की कृपा और उपचार के बाद वे शीघ्र स्वस्थ हो गईं। उन्होंने सदा के लिए गुरु साहिब की संगत में रहने का संकल्प लिया और निभाया भी। वे अन्य सिक्खों के साथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ नांदेड़ तक गईं और गुरु साहिब के अंतिम समय तक वहीं रहीं। अपनी अद्भुत वीरता, नेतृत्व-क्षमता और समर्पण के कारण वे इतिहास में अमर हो गईं। वे भक्ति-शक्ति का प्रतीक बन गईं। उनकी वीरता, उनका समर्पण किसी राजपाट अथवा सांसारिक सम्मान के लिए नहीं, धर्म और मानवीय मूल्यों के लिए था।

स्त्री के अपार गुणों और क्षमताओं के बारे में यदि जानना हो तो गुरबाणी और सिक्ख इतिहास से अधिक श्रेष्ठ स्रोत कोई और नहीं हो सकता। गुरु साहिबान ने स्त्री का सम्मान करना सिखाया और उन्हें सम्मान का अधिकारी बनाया। स्त्री के सम्मान का आधार किसी भावना, दया, करुणा अथवा प्रतिदान के अधीन नहीं, उसके गुणों के कारण स्थापित किया गया। उसका सर्वश्रेष्ठ गुण प्रेम है, जिससे वह अपने पति को पा लेती है। गुरु साहिबान ने वचन किए कि इसी प्रेम-शक्ति से तो परमात्मा को भी प्राप्त कर लिया जाता है। श्री गुरु अरजन साहिब ने स्त्री के इस गुण को उभार कर सामने रखा :

*सा गुणवंती सा वडभागणि ॥*
*पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥*
*रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥* *(पन्ना ९७)*

जिस स्त्री ने अपने प्रेम-भाव से पति को पा लिया है, वही गुणवान है, भाग्यशाली है। किसी स्त्री के लिए संतानवान, शील, संयम आदि गुणों से युक्त होना और सुहागिन होना गौरव का विषय माना जाता है। गुरु साहिब ने कहा कि पति को प्रेम से पा लेने के कारण वह इन सारे गुणों की अधिकारी स्वयं ही हो जाती है। श्री गुरु नानक साहिब ने इस गूढ़ तत्व को समझाते हुए वचन किए कि मन में उपजे गहरे प्रेम के कारण ही स्त्री धैर्य, संयम, संतोष, सत् जैसे गुणों से भर जाती है। इसी कारण वह अपने पति की प्रिय हो जाती है-- *"सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥"* प्रेम की इस भावना से परमात्मा की भक्ति होनी चाहिए-- *"प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥"* हमारे समाज में आज भी स्त्री अपने अधिकारों और सम्मान के लिए प्रयासरत है। इसके लिए तरह-तरह के तर्क दिए जाते हैं। अनेक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक कारणों से स्त्री के अधिकारों का समर्थन किया जाता है। नारी की बात करते हुए यदि मात्र गुरबाणी और सिक्ख इतिहास को ही आधार बना लिया जाए तो किसी अन्य तर्क की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती। सारे दिए जाने वाले तर्कों का खोखलापन भी सामने आ जाता है। स्त्री अपने स्वभाव और गुणों के कारण ही श्रेष्ठ है। एक सिक्ख स्त्री पर धार्मिक व सामाजिक स्तर पर किसी भी तरह की कोई रोक अथवा प्रतिबंध नहीं है। गुरबाणी के अनुसार परमात्मा की भक्ति ही जीवन का मूल मनोरथ है और इसकी प्राप्ति के लिए मति को वैसे धारण करना चाहिए जैसे माता के लिए मन में संकल्प होता है-- *"मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥"* यह स्त्री-सम्मान की पराकाष्ठा है और पूरे संसार के लिए अनमोल प्रेरणा।

Final

# गुरबाणी में महिला-उत्थान संबंधी आए विचार

-डॉ. परमजीत कौर*

नर तथा नारी सृष्टि-स्वरूप के दो भाग हैं। नारी के बिना सृष्टि का विकास असंभव है। नर-नारी का सम्बंध शाश्वत है। नारी समाज की आधारशिला है। यदि पुरुष के बिना समाज गतिहीन है तो महिला के बिना स्थितिहीन है। नर तथा नारी जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। भक्तों, महापुरुषों के जीवन-निर्माण में उनकी माताओं का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। नैपोलियन का कथन है-- *"मुझे अच्छी मातायें दो, मैं तुम्हें अच्छा राष्ट्र दूंगा।"*

भारतीय समाज में नारी की स्थिति दयनीय रही है। उसे निर्बल, आश्रिता आदि कहा जाता था। 'मनुस्मृति' में कहा गया है कि स्त्री बचपन में पिता, यौवनावस्था में पति तथा बुढ़ापे में पुत्र के अधीन रहे। उसे स्वतंत्रता का अधिकार नहीं है :

*पिता रक्षति कौमार्य, भर्ता रक्षति यौवने।*
*पुत्रो रक्षति वार्द्धम्ये, न स्त्री स्वातंत्रयमर्हति।*

यही नहीं, स्त्रियों को विद्याध्ययन का अधिकार नहीं है। स्त्रियों को धर्म-कर्म करने की आवश्यकता नहीं है। उनके विवाह-संस्कार में ही सारे धर्म-कर्म आ जाते हैं। (मनुस्मृति) प्राचीन काल में मंदिरों में देवदासी-प्रथा प्रचलित थी। हिंदू स्त्रियों को पति के मरने के बाद सती होना पड़ता था अर्थात् स्त्री आग में जलकर प्राण त्यागने के लिए मज़बूर थी। महाभारत काल में 'नियोग प्रथा' का विधान था। विधवा स्त्री को पर-पुरुष से पुत्र प्राप्त करने के लिए विवश किया जाता था।

मुगल काल में स्त्रियों पर अत्याचार किया जाता रहा है। युद्ध के अवसर पर विजयी सेना शत्रुओं की स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करती थी। उनके साथ बलात्कार करना, उन्हें बंदी बनाकर अपने देश ले जाना आपत्तिजनक नहीं समझा जाता था। श्री गुरु नानक देव जी ने महलों में सुखपूर्वक रहने वाली स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन किया है। आप जी का कथन है कि जब मुगलों तथा पठानों का युद्ध हुआ तो मृतक पुरुषों की स्त्रियों के कपड़े सिर से उतर गए तथा पैरों तक उनके वस्त्र फट गए। कई अत्याचार के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गईं :

*--जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥*
*से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥*
*महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥* (पन्ना ४१७)

*--इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥*
*इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥*
*जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥* (पन्ना ४१७)

*--धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥*
*दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥*
(पन्ना ४१७)

गुरबाणी में नारी को सम्माननीय स्थान प्राप्त है। श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्रियों की अधोगति का विरोध करते हुए समझाया है कि स्त्री पूजनीय है। वह जन्म-दाती है, जगत् की उत्पत्ति का कारण है। स्त्री के साथ शादी

*६२०, गली नं. १, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६

Final

करने के बाद पुरुष का सभी से सम्बंध बनता है। जिस स्त्री से भक्त, महापुरुष, शूरवीर, राजा आदि पैदा होते हैं उसे बुरा कहना, उसके साथ दुर्व्यवहार करना उचित नहीं है :

*भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥*
*भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥*
*भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥*
*सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥*
*(पन्ना ४७३)*

नारी पूर्णता की सूचक है। गुरबाणी में नर-नारी को एक दूसरे का पूरक कहा गया है। एक साथ रहने वाले ही वास्तविक स्त्री-पुरुष नहीं कहलाते, जो दो शरीर होते हुए भी एक आत्मा हो जाएं अर्थात् जो एक-दूसरे के पूरक बन कर रहें वे ही वास्तविक स्त्री-पुरुष हैं :

*धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥*
*एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥*
*(पन्ना ७८८)*

गुरबाणी में महिलाओं को पुरुषों के समान ही सम्मान दिया गया है। श्री गुरु रामदास जी के अनुसार नर-नारी प्रभु के बनाए हुए हैं। सबमें परमात्मा का प्रकाश है। सब बराबर हैं। कोई जीव छोटा-बड़ा नहीं है :

*--माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥*
*सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥*
*(पन्ना ४९४)*

*--नारी पुरखु पुरखु सभ नारी*
*सभु एको पुरखु मुरारे ॥ (पन्ना ९८२)*

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि परमात्मा का गुणगान करने वाले चाहे स्त्री हों या पुरुष, उनके मस्तक पर भाग्य की मणी चमकती है। वे भाग्यशाली हैं :

*नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥*
*सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥*
*बिनु पिर पुरखु ना जाणई*
*साचे गुर कै हेति पिआरि ॥ (पन्ना ५४)*

भाई साहिब भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार "भारत की प्रचलित रीति के अनुसार सिक्ख धर्म में स्त्री शूद्र अथवा पैर की जूती नहीं और न ही कई देशों की वर्तमान दशा के अनुसार सिर का ताज है, मगर व्यवहार तथा परमार्थ में सहायता देने वाली, गृहस्थ की गाड़ी चलाने वाली, पुरुष की तरह दूसरा पहिया तथा भाई गुरदास जी के इस कथन के अनुसार-- *'लोक वेद गुण गिआन विचि, अरध सरीरी मोख दुआरी'* मानी गई है।" *(गुरमति मारतंड, भाग पहला, पृष्ठ ८६)*

श्री गुरु अमरदास जी ने स्त्री जाति को समानता का दर्जा देने के लिए पर्दा-प्रथा को समाप्त करने का यत्न किया। गुरु जी के दरबार में स्त्री को पर्दा करके आने की आज्ञा नहीं थी। स्त्री पुरुष के समान संगत में आकर आज़ादी से सेवा आदि कार्य कर सकती थी। गुरु जी ने सती-प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाई और समझाया कि उन महिलाओं को सती नहीं कहना चाहिए जो पति के शरीर के साथ जल कर मर जाती हैं। वास्तव में प्रभु-पति के वियोग में मरने वाली जीव-स्त्री-पत्नी ही सती है। जो शील तथा संतोषी जीवन व्यतीत करे, उसे भी सती समझना चाहिए :

*सतीआ एहि न आखीअनि*
*जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥*
*नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥*
*भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥*
*सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥*
*(पन्ना ७८७)*

श्री गुरु रामदास जी ने दहेज देने तथा लेने वालों को मनमुख कहा है और दहेज से

Final

पीड़ित स्त्री को उत्थान का रास्ता दिखाया है। आपके विचार के अनुसार मां-बाप को कन्या को अच्छे संस्कारों से सुसंस्कृत कर उसको नाम-धन के साथ सज्जित करना चाहिए :

*होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि*
*सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥*
*हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥*
*(पन्ना ७९)*

जिस नारी के हृदय में प्रभु का नाम बस जाता है वह दया, धर्म, क्षमा, विनम्रता, मधुरता आदि गुणों से सुशोभित होकर समाज में आदर प्राप्त करती है। गुरु साहिब ने नारी के बत्तीस गुणों का उल्लेख किया है-- *"बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥"* इन गुणों से सज्जित नारी सारे परिवार में श्रेष्ठ तथा सबको सुमति देने वाली बन जाती है :

*सभ परवारै माहि सरेसट ॥*
*मती देवी देवर जेसट ॥ (पन्ना ३७०)*

जिस घर में नारी रहती है वह शोभा वाला हो जाता है :

*जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता ॥ (पन्ना ३७०)*

आज भी नारी (मां) के गर्भ में कन्या होने से भ्रूण-हत्या की जाती है। श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि वह गृह धन्य है जिसमें स्त्री प्रकट होती है :

*धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥ (पन्ना ३७०)*

गुरबाणी में स्त्री को सहधर्मिणी के रूप में दर्शाया गया है, जो पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर सेवा आदि कार्य करती है। श्री गुरु अंगद देव जी की सुपत्नी माता खीवी जी लंगर में सेवा किया करते थे। उनकी सेवा की बदौलत गुरु के लंगर में सबको घी वाली खीर बांटी जाती थी :

*बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥*
*लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥*
*(पन्ना ९६७)*

औरत भक्ति में बाधक नहीं सहायक है :

*जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥*
*(पन्ना ४७३)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने "परमात्मा की भक्ति मानो मधुर स्वभाव वाली स्त्री है" कहकर स्त्री को आदर दिया है :

*निज भगती सीलवंती नारि ॥ (पन्ना ३७०)*

हमारे समाज की विडंबना है कि आज की नारी प्रचार-प्रसार के वैज्ञानिक साधनों के समान विज्ञापन की विधा बन गई है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसके विज्ञापन का माध्यम नारी न हो। गुरु साहिबान ने नारी को भक्त तथा गुरमुख के प्रतीक के रूप में प्रकट कर उसे सम्माननीय बनाया है :

*--गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उरधारि ॥*
*मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥*
*सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥*
*(पन्ना ३१)*
*--जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥*
*सहजि संतोखि सीगारिआ मिठा बोलणी ॥*
*(पन्ना १७)*

गुरबाणी में पुरुष के समान नारी के स्वाभिमान को भी महत्त्व दिया गया है। जिस प्रकार नारी के लिए पतिव्रत आवश्यक है उसी प्रकार पुरुष के लिए भी स्त्रीव्रत जरूरी है। पर-नारी पर कुदृष्टि डालने वाले को अंधा तथा बुरा कहा गया है। वह नीच तथा व्यभिचारी है :

*--घर की नारि तिआगै अंधा ॥*
*पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ (पन्ना ११६४)*
*--किआ गालाइओ भूछ पर वेलि न जोहे कंत तू ॥*
*(पन्ना १०९५)*

Final

*--वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥*
*(पन्ना १५४)*

पर-स्त्री के रूप को देखना आंखों का सूतक (अपवित्रता) माना गया है :

*अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥*
*(पन्ना ४७२)*

संक्षेप में कह सकते हैं कि गुरबाणी में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकारों से सुशोभित कर सम्माननीय स्थान देकर नारी-उत्थान को महत्त्व दिया है तथा उच्च आचरण वाली, गुण-संपन्न, सत्-संतोष, दया-धर्म को शृंगार बनाने वाली स्त्री को श्रेष्ठ एवं गौरवमयी कहा गया है। आधुनिक युग में महिलाओं को पुरुषों के समान सर्वाधिकार प्राप्त हैं तथा महिलायें धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में उच्च स्थानों पर सुशोभित हैं। इसके विपरीत आज भी बलात्कार जैसी घटनाओं ने नारी के प्रति सम्मान को कहीं न कहीं ठेस पहुंचाई है। यदि सभी नर-नारी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मुक्त होकर अपने अधिकारों के साथ-साथ सामाजिक तथा पारिवारिक स्तर पर अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग रहें तथा गुरबाणी में निर्दिष्ट उपदेशों के अनुसार अपना जीवन बनाने का यत्न करें, तो निश्चय ही हम सब गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। ☸

## *अमर शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ* *(पृष्ठ २५ का शेष)*

जांबाज़, निर्भय गुरु के सिंघों ने जयकारा गुंजाकर मौत को चुना। मानो, ज़ालिम हकूमत के चेहरे पर ज़ोर से तमाचा मार दिया हो।

पहले भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाया गया। एक बड़ा-सा लोहे का चक्कर, जिस पर बड़े-बड़े एवं तीखे सूए (बड़ी कीलें) फिट थे, उस पर लेटाकर बांध दिया गया। यातनाएं देने का ज़ालिमाना ढंग था यह। भाई सुबेग सिंघ ने अपने युवा पुत्र से कहा, "हे पुत्र! अकाल-अकाल गुंजाते हुए शहादत प्राप्त करना।"

पिता की आशीष पर पुत्र 'अकाल-अकाल' गुंजाते हुए सिक्खी केशों-श्वासों के साथ निभा गया। ज़ालिमाना प्रचलित ढंग द्वारा भाई सुबेग सिंघ को भी शहीद कर दिया गया।

उनकी महान् शहादत पर देश भर में हाहाकार मच गई। लोगों को पता था कि दोनों पिता-पुत्र बहुत अच्छे और निर्दोष इंसान थे। शरीफ व नम्र स्वभाव वाले मुसलमानों ने भी खेद व दुख प्रकट किया। उन्होंने शर्म भी महसूस की। हिंदुओं में मायूसी व निराशा फैल गई। सिक्ख कौम का खून खौलने लगा। सिंघों ने उनकी शहादत का बदला लेने के लिए पूरे पंजाब में फैल गए। फिर तो सिंघों ने मुगलों, दुर्रानियों आदि विदेशी आक्रमणकारियों के छक्के छुड़ा दिए और पंजाब में उनके पैर नहीं जमने दिए।

प्रत्येक दिन अरदास करते समय प्रत्येक सिक्ख श्रद्धापूर्वक अमर शहीद भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ की महान शहादत को याद करता है; उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता है। हमें अपने बच्चों को उनकी शहादत के बारे में विस्तारपूर्वक बताना चाहिए, ताकि वे उनके जीवन से प्रेरणा व आगवानी लेकर अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सकें। महान एवं अमर पिता-पुत्र के जीवन-वृत्तांत को स्कूलों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाना चाहिए। ☸

Final

## ख़बरनामा

# दोषियों को सज़ा दिलाने वाले गवाह और वकील शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से सम्मानित

श्री अमृतसर : २६ जनवरी : १९८४ ई की सिक्ख नसलकुशी के दोषियों को सज़ा दिलाने वाले गवाहों और वकीलों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से मुख्य कार्यालय स तेजा सिंघ समुंदरी हाल में किए गए एक विशेष समारोह में सम्मानित किया गया। सम्मानित किए गए ७ गवाहों में बीबी जगदीश कौर, बीबी निरप्रीत कौर, स जगशेर सिंघ, स कुलदीप सिंघ, स संतोख सिंघ, स संगत सिंघ और स सुरजीत सिंघ शामिल थे, जबकि वकीलों में स आर एस चीमा, स हरविंदर सिंघ फूलका, स डी पी सिंघ, बीबी तरन्नुम चीमा, स गुरबख्श सिंघ, स जसविंदर सिंघ और बीबी कामना वोहरा शामिल थे। इन सम्मानित शख़्सियतों को सम्मान में शिरोमणि गु प्र कमेटी की तरफ से सिरोपाओ, श्रीसाहिब, चांदी की तश्तरी और चांदी के यादगारी सिक्के दिए गए। सम्मान समारोह के दौरान शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल और शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स सुखबीर सिंघ बादल उपस्थित रहे।

इस अवसर पर भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने संबोधित करते हुए १९८४ ई की सिक्ख नसलकुशी को कांग्रेस सरकार के द्वारा की अमानवीय घटना बताया। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम ने हमेशा देश की खातिर बड़ी कुर्बानियां देकर इतिहास में मिसाल कायम की है, परंतु दुख की बात है कि जून और नवंबर १९८४ के दौरान सिक्खों को खत्म करने के लिए केंद्रीय हकूमत ने सारी हदें पार कर दीं। भाई लौंगोवाल ने पीड़ितों को इंसाफ दिलाने के लिए गवाहों की हिम्मत की सराहना करते हुए कहा कि इन गवाहों ने अपनी जान की परवाह किए बिना निरंतर संघर्ष जारी रखा। उन्होंने वकीलों की तरफ से सिक्खों को इंसाफ दिलाने के लिए लड़ी कानूनी लड़ाई को भी महत्त्वपूर्ण बताया। भाई लौंगोवाल ने कहा कि सभी दोषियों को सज़ा दिलाने तक संघर्ष जारी रहेगा और शिरोमणि गु प्र कमेटी हर पीड़ित के साथ खड़ी रहेगी।

इस दौरान शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स सुखबीर सिंघ बादल ने कहा कि १९८४ ई में किया गया सिक्ख कत्लेआम तत्कालीन कांग्रेस सरकार की सोची-समझी साज़िश थी और इसके मुख्य दोषी राजीव गांधी थे, इसलिए राजीव गांधी के खिलाफ भी केस दर्ज होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ३४ साल बाद सज्जन कुमार और दो अन्य दोषियों को सज़ा मिलने से पीड़ितों का संघर्ष कुछ सफल अवश्य हुआ है परंतु अब भी शेष कई दोषियों को सज़ा दिलाना बाकी है। उन्होंने कहा कि गवाहों ने अपनी जानें जोखिम में डाल कर तीन दोषियों को सज़ा दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके लिए गवाहों के साहस के आगे वे नतमस्तक हैं। उन्होंने शिरोमणि गु प्र कमेटी की तरफ से गवाहों और वकीलों के सम्मान को सम्पूर्ण सिक्ख कौम की तरफ से किया गया सम्मान कहा और १९८४ ई के पीड़ितों के साथ खड़े होने की वचनबद्धता दोहराई।

कत्लेआम की पीड़िता बीबी जगदीश कौर ने भावुक होते हुए कहा कि बीते ३४ सालों में वे गहरी मानसिक पीड़ा से गुजरी हैं। इस दौरान उनको डराने-धमकाने तथा खरीदने के लिए दोषियों की तरफ से हर प्रयास किया गया, परंतु उन्होंने इंसाफ मिलने तक संघर्ष जारी रखने का प्रण निभाया है। उन्होंने कहा कि हमारी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई। बीबी जगदीश कौर ने भी राजीव गांधी के खिलाफ़ केस दर्ज करने और 'भारत रत्न' वापिस लेने की मांग की।

# धुप्पसड़ी में बेअदबी की कोशिश : भाई लौंगोवाल ने जताया खेद

श्री अमृतसर : १६ जनवरी : गुरदासपुर ज़िले की तहसील बटाला के गांव धुप्पसड़ी में एक व्यक्ति द्वारा

Final

गुरद्वारा साहिब में दाखिल होकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी करने की कोशिश पर शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने खेद जताया है। उन्होंने कहा कि यह बेहद अफसोसनाक है कि इस घटना को अंजाम देने वाला एक पुलिस अधिकारी का लड़का है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि यह बड़े ही दुख की बात है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही। उन्होंने सरकार को ऐसे शरारती तत्वों पर सख़्त से सख़्त कार्यवाही करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग क्षमा करने योग्य नहीं। शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान ने संगत से अपील की कि वह गुरद्वारा साहिबान की निगरानी और सेवा-संभाल के लिए पुख्ता प्रबंध करे, जिससे भविष्य में ऐसी घटनाएं न घटें।

## कानपुर सिक्ख कत्लेआम से संबंधित एस. आई. टी. गठित करने का भाई लौंगोवाल ने किया स्वागत

श्री अमृतसर : ७ फरवरी : सन् १९८४ में उत्तर प्रदेश के कानपुर में किए गए सिक्ख कत्लेआम के मामलों की जांच करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चार-सदस्यीय विशेष जांच टीम गठित करने का शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने स्वागत किया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि १९८४ ई में दिल्ली और कानपुर सहित देश के अन्य शहरों में भी सिक्खों का बड़ी बेरहमी से कत्ल किया गया था। दुख की बात यह है कि ३४ वर्ष बीतने के बाद भी अभी तक पीड़ितों को मुकम्मल तौर पर इंसाफ नहीं मिल सका। इस समय के दौरान कई मामले बंद कर दिए गए और कई दोषी राजसी सरपरस्ती होने के कारण अभी तक बचते रहे हैं। इस दौरान कई पीड़ित परिवारों के सदस्य इंसाफ को तरसते हुए इस संसार से कूच कर गए। शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान ने कहा कि कानपुर सिक्ख नसलकुशी के दोषियों को सज़ा दिलाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित की एस. आई. टी. से पीड़ितों को इंसाफ मिलने की उम्मीद जगी है। उन्होंने कहा कि १९८४ ई का सिक्ख कत्लेआम अमानवीय एवं क्रूर घटना के रूप में जाना जाता है और इसके दोषियों को किसी भी कीमत पर बख़्शा नहीं जाना चाहिए।

## सुप्रीम कोर्ट में अमृतधारी वकील को कृपाण समेत जाने से रोकने की भाई लौंगोवाल ने की निंदा

श्री अमृतसर : ७ फरवरी : शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने भारत की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट में एक अमृतधारी वकील को कृपाण समेत दाखिल होने से रोकने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। मामला स. अंम्रितपाल सिंघ नामक गुरसिक्ख वकील से संबंधित है, जिसे सुरक्षा-कर्मियों द्वारा सुप्रीम कोर्ट में कृपाण पहन कर दाखिल होने से रोका गया। स. अंम्रितपाल ने इसकी शिकायत चीफ जस्टिस के पास की है। भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने इसे सिक्खों की धार्मिक आज़ादी के विरुद्ध बताया है। उन्होंने कहा कि भारत की आज़ादी के लिए अस्सी फीसदी से अधिक कुर्बानियां करने वाले सिक्खों के साथ ऐसा होना हरगिज़ बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। यह अपने ही देश में बेगानों वाला व्यवहार है। उन्होंने कहा कि देश की सर्वोच्च अदालत, जहां से लोगों को इंसाफ मिलता है, यदि वहां तैनात कर्मचारी ही मानवाधिकारों का हनन करेंगे तो फिर न्याय की उम्मीद और कहां से की जा सकती है? भाई लौंगोवाल ने कहा कि कृपाण सिक्खों का धार्मिक चिन्ह है और सबको पता है कि अमृतधारी सिक्ख इसे हमेशा अपने अंग-संग रखते हैं। उन्होंने देश के चीफ जस्टिस से मांग की कि दोषी सुरक्षा-कर्मियों के खिलाफ सख़्त कार्यवाही की जाए, जिससे भविष्य में कोई ऐसी हरकत न करे।

Final